



श्री
द्रव्यानुयोग-द्वितीय प्रवेशिका.

ले० - मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी मा०

प्रकाशक,
श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल
मु० लाहापट (माग्वाट)

द्रव्य सहायक—

श्रीसुखसागर ज्ञानप्रचारक सभा

श्री भगवतीजी सूत्रकि पूजाकि
! आमदनीसे

इन पुस्तकोंकी आमदनीसे और भी

ज्ञानप्रचार बढ़ाया जावेगा ।

ग्रथ श्री

प्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका

जिम्मे

आठ कर्मोकि १५८ उत्तर प्रकृति

तथा

पैतालीस आगमोंकि सूची



लेखक,

श्रीमदुपकेश (कमला) गच्छीय
मुनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज



प्रकाशक

श्री जैन नवयुवक मित्रमंडल

मु० लोहावट (भागवाड)

प्रथमावृत्ति ५०००

विक्रम संत १८८०

किंमत १०० नकलका रु १०

को आपश्री ठीक तोरमे बनला रहे हैं प्राचीन इतिहास द्वारा हमारे जैनधर्मका हमारे पूर्वजोंका गौरव, हमारी सपत्ति, हमारा प्रेम ऐश्वर्यना उदारता आदिका दिग्दर्शन कराते हुवे हमारेपर बडा भारी उपकार कर रहे हैं इनोंका फल यह हुवा कि यद्वापर " श्री जैन नव युवक मित्र मठल " कि स्थापना हुट है जिनोंका स्वाम उद्देश्य ममान मेवा और ज्ञानप्रचार बडानेका है साथमें हानिकारक पटीहुइ रुढीयोंमें तथा पगुल सरचारोंको कम करना ओर अपन पुरजोकी मार्फीक साधि चाली कि प्रवृत्ति प्रयत्न उपदेश तथा भाषण करते हुवे तफे आकर्षित हो गहा है स्वल्पकाल में भी इस मित्र मठलने बृद्ध मज्जनोकी मदद मे अच्छी सफलता प्राप्त करी है भविष्यके लिये उत्साह भी बडता जा रहा है हम शासनदेव मे प्रार्थना करते हैं कि इस मित्रमठलका दिन प्रतिदिन उत्साह बडता रहे ओर एमे महा-माओंका विहार मरम्यल जेमे देशोंमें हमेशो होने रहे अन्य मुनिमहारानोंमे भी हमारी नम्रता पुवक बिनती है कि आप श्रीमान् मरम्यल जेसे अपठित क्षेत्रमे विहारकर हमलोगो पर उपकार करे समन जाने मे मारवाटी लोग काम कर बतलानेवाले हैं । गाति

भवनीय

१९८० तऱ मीती
श्रावण शुभ ९

श्रीगमल कोचर
प्रसिडन्ट श्री जैन नवयुवक मित्र मठल,
मु लोहावट—मारवाड

अथश्री

आठ कर्मों कि १५७ प्रकृति ।



जीवका स्वभाव चैतन्य और कर्मोंका स्वभाव जड एव जीव और कर्मोंका भिन्न भिन्न स्वभाव होने पर भी जैसे धूलमें धातु तीलोंमें तैल दूधमें घृत है, इसी भाँतीक अनादि कालसे जीव और कर्मों के सवन्ध है जैसे यत्रादि के निमित्त कारणसे धूलसे धातु तीलोंसे तैल दूधसे घृत अलग हो जाते है इसी भाँतीक जीवों को ज्ञान दर्शन तप जप पूजा प्रभावनादि शुभ निमित्त मीलनेसे कर्मों और जीव अलग अलग हो जीव सिद्ध पदकों प्राप्त कर लेते है

जयतक जीवों के साथ कर्म लगे हुवे है तयतक जीव अपनी दशाको भुल मिथ्यात्वादि परगुण में परिभ्रमन करता है जैसे सुवर्ण आप निर्मल अकलंक कोमल गुणमाला है किन्तु अग्निका सयोग पाके अपना असली स्वरूप छोड उष्णता को धारण करता है फिर जल वायुका निमित्त मीलने पर अग्निका त्यागकर अपने असली गुणको धारण कर लेता है इसी भाँतीक जीव भी निर्मल अकलंक अमूर्ति है परन्तु

मिथ्यात्वादि अज्ञान के निमित्त कारणमे अनेक प्रकार के रूप धारण कर ससारमें परिभ्रमन करता है जय मद्गान दशनादि का निमित्त प्राप्त कर मिथ्यात्वादिना सग त्याग अपना अमली स्वरूप धारण कर सिद्ध अस्थायी प्राप्त कर लेता है

जीव अपना स्वरूप कीस कारणसे भूल जाता है ? जैसे कोई अकलमद समजदार मनुष्य मदिरापान करनेसे अपना भान भूल जाता है फिर उन मदिरा का नशा उतरने पर पश्चात्ताप कर अच्छे कार्यमें प्रवृत्ति करता है इमी माफीक अनन्त ज्ञानदर्शनका नायक चैतन्यके मोहादि कर्मदलक पिपाकोदय होता है तब चैतन्यको वैमान-पिकल-यना देता है फिर उन कर्मों को भोगके निर्जरा करने पर अगर नया कर्म न बन्धे तो चैतन्य कर्म मुक्त हो अपने स्वरूपमें रमणता करता हुवा सिद्ध पदको प्राप्त कर लेते है

कर्म क्या वस्तु है ? कर्म एक कीस्मके पुद्गल है जिस पुद्गलोंमें पांच वर्ण दोगन्ध पाचरम चार स्पर्श है जीवोंके उन पुद्गलों से अनादि कालका सवध लगा हुआ है उन कर्मोंके प्रेरणासे जीवोंके शुभाशुभ अध्यवसाय उत्पन्न होते है उन अध्यवसायोंकी आकर्षणमे जीव शुभाशुभ कर्म पुद्गलोंको ग्रहण करते है । वह पुद्गल आत्मा के प्रदर्शोपर चीटक जाते है अर्थात् आत्म प्रदेशों के साथ उन कर्म पुद्गलोंका खीरनिरकी माफीक बन्ध होते है चिन्तोंमे वह कर्म पुद्गल आत्माके गुणोंको भाखा बना देते है जैसे मूर्त्यको

चादल भ्राजा बनाता है । जैसे जैसे अथर्वमायाकी मदता तीव्रता होती है वैसे वैसे कर्मों के अन्दर रम तथा स्थिति पट जाती है वह कर्म ग्रन्थने के बाद यह कर्मकीतने कालसे विपाक उदय होते है उसको अनादा काल कहते है जैसे हुन्डीके अन्दर मुदत डाली जाती है ॥ कर्म दो प्रकारसे भोगवीये जाते है (१) प्रदेशोदय (२) विपाकोदय जिस्मे तप जप ज्ञान ध्यान पूजा प्रभाजनादि करनेसे दीर्घ कालके भोगवने योग्य कर्मोंको आकर्षण कर स्वल्प कालमें भोगव लेते है जिसकी खर छदमस्थोंको नही पडती है उसे प्रदेशोदय कहते है तथा कर्म विपाकोदय होनेसे जीवोंको अनेक प्रकारकी पिटम्बना से भोगवना पडे उसे विपाकोदय कहते है ।

अशुभ कर्मोदय भोगवते समय आर्तध्यानादि अशुभ क्रिया करने से उन अशुभ कर्मोंमें और भी अशुभ कर्म स्थिति तथा अनुभाग रसकि वृद्धि होती है तथा अशुभ कर्म भोगवते समय शुभ क्रिया ध्यान करनेमे यह अशुभ पुद्गल भी शुभपणे प्रणम जाते है तथा स्थितिघात रसघात कर बहुत कर्म प्रदेशोंसे भोगवके निर्जरा कर देते है ॥ शुभ कर्मोदय भोगवते समय अशुभ क्रिया करनेसे वह शुभ कर्म पुद्गल अशुभपणे प्रणमते है और शुभ क्रिया करनेसे उन शुभ कर्मोंमें और भी शुभकि वृद्धि होती है वह शुभ कर्म सुखे सुखे भोगव के अन्तमें मोक्षपदको प्राप्त कर लेते है ।

साहुकार अपने धनका रक्षण कर कर सकेंगे कि प्रथम

चौर आनेका कारण हेतु रहस्तेको ठीक तोरपर समजलेगें फीर उन चौर आनेके रहस्तेको बन्ध करवादे या पेहरादार रखदे तो घनका रक्षण कर सके इसी माफीक शास्त्रकारोंने फरमाया है कि प्रथम चौर याने कर्मोंका स्वरूपको ठीक तोरपर समजो फीर कर्म आनेका हेतु कारणको समजो फीर नया कर्म आनेके रहस्तेको रोकें और पुराणे कर्मोंको नाश करनेका उपाय करों ताके ससारका अन्त कर यह जीव अपने निज स्थान (मोक्ष) को प्राप्त कर सादि अनंत भाग सुखी हो ।

कर्मोंकि विषय के अनेक ग्रन्थ है परन्तु साधारण मनुष्योंके लिये एक छोटीसी कीताब हो तो वह सुविधा के साथ लाभ उठा सके इस हेतुसे इस छोटीसी कीताब द्वारा मूल आठ कर्मोंकि उत्तरकर्म प्रकृति १५८ का सक्षिप्त विवरणकर आपकि सेवामें रखी जाति है आशा है कि आप इस कर्म प्रकृतियोंको कठस्थ कर आगे के लिये अपना उत्साह बढ़ाते रहेंगे इत्यलम् ।

॥ मूल आठ कर्मोंकि उत्तर प्रकृति १५८ ॥

- (१) ज्ञानावर्णिकर्म—चैतन्यके ज्ञान गुणको रोक रखा है ।
- (२) दर्शनावर्णिकर्म—चैतन्यके दर्शन गुणको रोक रखा है ।
- (३) वेदानियकर्म—चैतन्यके अव्यावाद गुणको रोक रखा है ।
- (४) मोहनियकर्म—चैतन्यके चायक गुणको रोक रखा है ।
- (५) आयुष्यकर्म—चैतन्यके अटल अग्रगाहाना गुणको रोक रखा है ।
- (६) नामकर्म—चैतन्यके अमूर्ति गुणको रोक रखा है ।

(७) गौत्रकर्म—चैतन्यके अगुरु लघु गुणकों रोक रखा है ।

(८) अन्तरायकर्म—चैतन्यके गीर्य गुणकों रोक रखा है ।

इन आठों कर्मोंके उत्तर प्रकृति १५८ हैं उन्नोंका विवरण—

(१) ज्ञानावर्णियकर्म जैसे घाणीका बहल-याने घा-
 णीके बहलके नैत्रोंपर पाट्टा घान्ध देनेसे कीसी वस्तुका ज्ञान
 नहीं होता है इसी माफीक जीवोंके ज्ञानावर्णिय कर्मपडल
 आजानेसे वस्तुतत्त्वका ज्ञान नहीं होता है । जीम ज्ञानावरणीय
 कर्मके उत्तर प्रकृति पाच है यथा—(१) मतिज्ञानावर्णिय,
 ३४० प्रकारके मतिज्ञान है (देखो शीघ्रबोध भाग ६ ठा)
 उनके आग्रण करना अर्थात् मतिसे कोमी प्रकारका ज्ञान नहीं
 होने देना अच्छी बुद्धि उत्पन्न नहीं होना तत्त्व वस्तुपर विचार
 नहीं करने देना प्रज्ञा नहीं फेलना—बदलेमें खराब मति-बुद्धि—
 प्रज्ञा-विचार पैदा होना यह सब मतिज्ञानावर्णियकर्मका ही
 प्रभाव है (२) श्रुतिज्ञानावर्णिय श्रुतिज्ञानको रोके, पठन
 पाठन श्रवण करनेको रोके, सद्ज्ञान हीने नहीं देवे योग्य
 मीलनेपर भी छत्र सिद्धान्त वाचना सुननेमें अन्तराय होना—
 बदलेमें मिथ्याज्ञान पर श्रद्धा पठन पाठन श्रवण करनेके
 रूची होना यह सब श्रुतिज्ञानावर्णियकर्मका प्रभाव है (३)
 अधिज्ञानावर्णियकर्म अनेक प्रकारके अधिज्ञानकों रोके
 (४) मनःपर्यवज्ञानावर्णियकर्म आते हुवे मनःपर्यवज्ञानको
 रोके (५) केवलज्ञानावर्णियकर्म सपूर्ण जो केवलज्ञान है
 उनकों आते हुवेकों रोके इति ॥

(२) दर्शनावर्णियकर्म—राजाके पोलीया जैसे कीसी मनुष्यको राजासे मीलना है परन्तु वह पोलीया मीलने नहीं देत है इसी माफिक जीवोंको धर्म राजा से मीलना है परन्तु दर्शनावर्णियकर्म मीलने नहीं देते है जिसकि उत्तर प्रकृति ना है

(१) चक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदय मे जीवोंको नेत्र (आँखों) हिन बना दे अर्थात् एकेन्द्रिय तेइन्द्रिय तेइन्द्रिय जातिमें उत्पन्न होते है कि जहाँ नेत्रोंका विलकुल अभाव है और चौरिन्द्रिय पाचेन्द्रिय जातिमें नेत्र होने पर भी रातीदा होना काना होना तथा विलकुल नहीं दीखना इमे चक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति कहते है (२) अचक्षु दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदयमे त्वचा जीभ नासु कान और मनसे जो वस्तुका ज्ञान होता है उनको रोके जिम्का नाम अचक्षु दर्शनावर्णिय कहते है (३) अग्रधि दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदय अग्रधि दर्शन नहीं होने देवे अर्थात् अग्रधि दर्शनको रोके (४) केवल दर्शनावर्णिय कर्मोदय, केवल दर्शन होने नहीं देवे अर्थात् केवल दर्शनपर आग्रहण कर रोक रख ॥ तथा पाच निद्रा निद्रा दर्शनावर्णियकर्म प्रकृति उदय से निद्रा आति है परन्तु सुये सोना सुये जाग्रत होना उमे निद्रा कहते है । और सुये सोना दु खपूर्वक जाग्रत हाना उसे निद्रानिद्रा कहते है । खडे खडेको तथा बैठे बैठेको निद्रा आये उमे प्रचला नामाकि निद्रा कहते है । चलते फीरतेको निद्रा आये उमे प्रचला प्रचला नामाकि निद्रा कहते है । दिनको या रातीमें चिंतन

(विचागहृत्वा) किया कार्य निद्राके अन्दर कर लेते हो उस स्त्यानद्धि निद्रा कहते है एव न्यार दर्शन और पाच निद्रा मीलाने मे नौ प्रकृति दर्शनावर्णियकर्मके है ।

(३) वेदनियकर्म—मधुलीप्त छुरी जैसे मधुका स्वाद मधुर है परन्तु छुरीकी धार तीक्ष्ण भी होती है इसी भाफीक जीवोंको शातावेदनि सुख देती है मधुवत् और असातावेदनि दुःख देती है छुरीवत् जीमकि उत्तर प्रकृति दोग है मातावेद-निय, असातावेदनिय, जीवोंको शरीर-कुटुम्ब धन धान्य पुत्र कलिप्रादि अनुकूल मामग्री तथा देवादि पाँद्गलीक सुख प्राप्ति होना उमे मातावेदनियकर्म प्रकृतिका उदय कहते है और शरीरमें रोग निर्धनता पुत्र कलिप्रादि प्रतिकूल तथा नरकादि के दु खोका अनुभव करना उसे असातावेदनियकर्म प्रकृतिकहते है ।

(४) मोहनियकर्म मदिरापान किया हुवा पुरुष बे-भान हो जाते है फीर उनकों हिताहितका ख्याल नही रहते है इमी भाफीक मोहनियकर्मोदयसे जीव अपना स्वरूप भूल जानेमे उसे हिताहितका ख्याल नही रहता है जिसके दो भेद है दर्शनमोहनिय सम्यक्त्व गुणको रोके और चारित्रमोहनिय चारित्र गुणको रोके जीसकि उत्तर प्रकृति अठारीस है जिसका मूल भेद दोग है (१) दर्शनमोहनिय (२) चारित्र मोहनिय जिस्मे दर्शनमोहनिय कर्मकि तीन प्रकृति है (१) मिथ्यात्व-मोहनिय (२) सम्यक्त्व मोहनिय (३) मिश्रमोहनिय—जेमे एक कोद्रव नामका अनाज होते है जिसको खानेमे नशा,

आ जाता है उन नशाके मारे अपना स्वरूप भूल जाता है ।

(क) जिस कोद्रव नामके धानको छाली सहित खानेसे बिलकुल ही घैमान हो जाते हैं इसी माफीक मिथ्यात्व मोहनिय कर्मोदय जीव अपने स्वरूपको भूलके परगुणमें रमणता करते हैं अर्थात् तत्र पदार्थकि विप्रीत श्रद्धनाको मिथ्यात्व मोहनिय कहते हैं जिसके आत्म प्रदेशोंपर मिथ्यात्वदलक होनेसे धर्मपर श्रद्धा प्रतित न करे अधर्मकि प्ररूपना करे इत्यादि ।

(ख) उस कोद्रव धानका अर्ध विशुद्ध अर्थात् कुछ छाली उतारके ठीक किया हो उनके खानेमें कभी सारचेती आति है इसी माफीक मिथमोहनीपाले जीवोंको कुछ श्रद्धा कुछ अश्रद्धा मिथमात्र रहते हैं उनोंको मिथमोहनि कहते हैं लेकीन वह है मिथ्यात्वमें परन्तु पहलों गुणन्यान छुट जानसे मव्य है ।

(च) उम कोद्रव धानको छाछादि मामग्रीसे धोके विशुद्ध बनाइ परन्तु उन कोद्रव धानका मूल जातिस्वभाव नहीं जानेसे गलछाक चर्ना रहती है इसी माफीक चायक सम्यक्त्व आने नहीं देवे और सम्यक्त्वका विराधि होने नहीं देवे उमे सम्यक्त्व मोहनिय कहते हैं । दर्शनमोह. सम्यक्त्व घाति है ।

दुसरा जो चारित्र मोहनिय कर्म है उसका दो भेद है (१) कषाय चारित्र मोहनिय (२) नोकषाय चारित्र मोहनिय जिसमें कषाय चारित्र मोहनिय कर्मके १६ भेद हैं । जिस्में एकेके च्यार च्यार भेद भी हो सक्ते हैं जेमे अनतानुबन्धी क्रोध अनतानुबन्धी जेसा, अप्रत्याख्यानि जेसा, प्रत्याख्यानि जेसा और सज्वलन जेसा एव १६ भेटोंका ६४ भेद भी होते हैं यहापर १६ भेद ही लिखते हैं ।

अनतानुबन्धी क्रोध-पत्थरकि रेखा सादृश, मान बज्रके
 स्थभ सादृश, माया वासाकी भूड सादृश, लोभ करमजी रेस्मके
 रग सादृश घात करे तो सम्यक्त्वगुणाके स्थिति जावत् जी-
 वकि, गति करे तों नरककि ॥ अप्रत्याख्यानि क्रोध तलावकि
 तड, मान टान्तकास्थभ, माया मेंढाका श्रृंग, लोभ नगरका कीच
 घात करे तों श्रावकके व्रतकि स्थिति एक वर्षाके, गति तीर्थच
 कि ॥ प्रत्याख्यानि क्रोध गाडाकी लीक, मानकाटका स्थभ
 माया चालता बैलकामूज, लोभ नेत्रोंके अञ्जन. घात करे तों सर्व
 व्रतकि, स्थिति करे तो च्यार मामकि, गति करे तों मनुष्यक
 ॥ सज्वलनका क्रोध पाणीकी लीक, मानठणका स्थभ, माया
 चांसकी छाल लोभ हलदिका रग, घात करे तों बीतरागपणाकी
 स्थिति क्रोधकी दो मास, मानकी एक मास मायाकी, पन्दर
 दिन, लोभकी अन्तर मुहुर्त. गति करे तो देवतावोंमें जावें. इ-
 शोलह प्रकारकी कपायकों कपाय मोहनिय कहते हैं

नौ नोकपायप्रकृति-हास्य-ऋतूहल मशकरी करना
 भय-डरना विस्मय होना । शोक-फोकर चिंता आर्तध्यान
 करना । जुगप्सा-ग्लानी लाना नफरत करना । रति-आरंमा
 दिकायोंमें खुशी लाना । अरति-सयमादि कार्योंमें अरति
 करना । स्त्रिवेद-जिस प्रकृतिके उदय पुरुषोंकि अभिलाषा क
 रना । पुरुषवेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रियोंकि अभिलाषा क
 रना । नपुंसक वेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रि-पुरुष दोनोंवि
 अभिलाष करना ॥ एवं २८ प्रकृति.

(५) आयुष्य कर्मके चार प्रकृति हैं यथा—नरकायुष्य, तीर्थचायुष्य, मनुष्यायुष्य, देवायुष्य । आयुष्यकर्म जैसे कारागृहकी मुदत हो इतने दिन रहना पडता है इसी माफीक जीम गतिका आयुष्य हो उसे भोगवना पडता है ।

(६) नामकर्म चित्रकार शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके चित्रोंका अलोकन करता है इसी माफीक नामकर्मोदय जीवोंको शुभाशुभ कार्यमें प्रेरणा करनेवाला नामकर्म है जो सर्की एकसोतीन (१०३) प्रकृतियों है ।

(७) गतिनामकर्मके चार प्रकृतियों हैं नरकगति, तीर्थचगति, मनुष्यगति, देवगति । एक गतिमें दूसरी गतिमें गमनागमन करना उभे गतिनामकर्म कहते हैं ।

(८) जातिनाम कर्म कि पाच प्रकृति हैं एकान्द्रिय जाति, वेदन्द्रिय० तेइन्द्रिय० चोरिन्द्रिय० पांचेन्द्रिय जाति नाम ।

(९) शरीर नामकर्मके पाच प्रकृति हैं औदारिक शरीर वैक्रिय० आहारीक० तेजस० कारमण शरीर० । प्रति दिन नाश—विनाश होनेवालोंको शरीर कहते हैं ।

(१०) अगोपाग नामकर्मके तीन प्रकृति हैं औदारिक शरीर अग उपांग, वैक्रिय शरीर अगोपाग, आहारीक शरीर अगोपाग, श्रेय तेजस कारमण शरीरके अगोपाग नहीं होते हैं ।

(११) बन्धन नामकर्मकी पदरा प्रकृति हैं—शरीरपणे पाँदल ग्रहन करते हैं फीर उनोंको शरीरपणे बन्धन करते हैं यथा—औदारीक औदारीकका बन्धन औदारीक तेजसका

रधन, औदारिक कारमाणका बन्धन, औदारिक तेजस कार-
माणका बन्धन, वैक्रय वैक्रयका बन्धन, वैक्रय तेजसका बन्धन,
बन्धन वैक्रयकारमाणका बन्धन वैक्रिय तेजस कारमाणका
बन्धन । आहारीक आहारीकका बन्धन आहारीक तेजसका
रधन आहारीक कारमाणका बन्धन आहारीक तेजस कार
माणका बन्धन । तेजस तेजसका बन्धन तेजस कारमाणका
रधन कारमाण-कारमाणका बन्धन । एव १५ ।

(च) सघातन नाम कर्म कि प्रकृति है जो पाँदल
शरीरपणे ग्रहन कीया है उनोंकों यथायोग्य अयव पणे मज-
जुत बनाना । जेमे औदागीक सघातन, वैक्रयसघातन आहारीक
सघातन, तेजस सघातन, कारमाण सघातन ।

(छ) महनन नाम कर्म कि छे प्रकृति है शरीर कि तारुत
हाड कि मजजुतिकों महनन रहते है यथा वज्र अपभनाराच
महनन । वज्रका अर्थ है सीला अपभका अर्थ है पाट्टा ना
राचका अर्थ है दोनो तर्फ मर्कट याने कुटीयाके आकार दोनो
तर्फ हडी जुडी हुट अर्थात् दोनो तर्फ हडीका मीलना उसके
उपर एक हडीका पट्टा और इन तीनोंमें एक सीली हो उसे
वज्रअपम नाराच सहनन कहते है ॥ नाराच सहनन-उपर
वत् परन्तु नीचमें सीली न हो । नाराच सहनन-इस्में पट्टा नहीं
है । अर्द्ध नाराच महनन-एक तर्फ मर्कट बन्ध हो दुसरी तर्फ
सीली हो । किलीका महनन-दोनो तर्फ अकुटाके माफिन
एक हडीमें दुसरी हडी फसी हुड हो । छेउट सहनन-आपस
में हडीयों जुडी हुड है ॥

(व) मस्थाननामकर्मकि छे प्रकृतियों है—शरीरकी आकृतिकों मस्थान कहते है समचतुरस्र मस्थान—पालटीमार के (पद्मासन) घेठनेमे चौतर्फ बराबर हा याने दोनों जानुके बिचमें अन्तर है इतना ही दोनों स्कन्धोंके बिचमें । इतना ही एक तर्फके जानु ओर स्कन्धके अन्तर हो उसे ममचतुरस्र मस्थान कहते है । निग्रोध परिमडल मस्थान नामीके उपरका भाग अच्छा सुन्दर हो आर नामीके निचका भाग हिन हो । सादि मस्थान—नामीके निचेका विभाग सुन्दर हो, नामीके उपरका भाग गुराब हो । कुन्न मस्थान—हाथ पैर गिर गर्दन अवयव अच्छा हो परन्तु छाती पेट पीठ गुराब हो । वामन मस्थान—हाथ पैरादि छोटे छोटे अवयव गुराब हो । हूडक मस्थान—मर्ब शरीर अवयव गुराब अप्रमाणीक हो ।

(ऋ) वर्णनामकर्मकि पाच प्रकृति है—शरीरके जो पुद्गल सागा है उन पुद्गलोंका वर्ण जैसे कृष्णवर्ण, निलवर्ण, रक्तवर्ण, पेतवर्ण, श्वेतवर्ण जीरोंके विम वर्ण नाम कर्मोदय होते है वैसा वर्ण मीलता है ।

(ज) गन्ध नामकर्मकि दो प्रकृति है—सुभिगन्ध नाम कर्मोदयसे सुभिगन्धके पुद्गल मीलते है दुभिगन्धनाम कर्मोदयसे दुभिगन्धके पुद्गल मीलते है ।

(ट) रस नामकर्मकि पांच प्रकृति है—पूर्ववत् शरीरके पुद्गल तिक्ररस, कडुकरम, रुपायरम, अम्लरस, मधुर रस, जैसे रस कर्मोन्म्य होता है वैसे ही पुद्गल शरीरपणे ग्रहन करते है ।

(ठ) स्पर्श नामकर्मकि आठ प्रकृति है जिस स्पर्श कर्मका उदय होता है वैसे स्पर्शके पुद्गलोंको ग्रहण करते हैं जैसे कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, शित, उष्ण, स्निग्ध, रुच ।

(ड) अनुपूर्वि नामकर्मकि चार प्रकृतियों है—एक गतिसे मरके जीव दूसरी गतिमें जाता हुआ विग्रह गति करते समयानुपूर्वि, प्रकृति उदय हो जीवको उत्पत्तिस्थान पर ले जाती है जैसे बेचा हुआ बहलको धणी नाथ गालके लेजावे जीस्का चार भेद नरकानुपूर्वि, तीर्थचानुपूर्वि, मनुष्यानुपूर्वि, देवआनुपूर्वि ।

(ढ) विहायगति नामकर्मकि दोप्रकृतियों है जिस कर्मोदयसे अच्छी गजगामिनी गति होती है उसे शुभ विहायगति कहते हैं और जिन कर्मोदयसे खरवत् खराग गति होती है उसे अशुभ विहायगति कहते हैं । इन चौदा प्रकारकि प्रकृतियोंके षिंड प्रकृति कही जाती है अथ प्रत्येक प्रकृति कहते हैं ।

पराघातनाम—जिस प्रकृतिके उदयसे कमजोरको तो क्या परन्तु बड़े बड़े सत्पवाले योद्धोंको भी एक छीनकमें पराजय कर देते हैं ।

उश्वासनाम—शरीरकि बाहारकि हवाको नासीकाद्वारा शरीरके अन्दर खीचना उसे श्वास कहते हैं और शरीरके अन्दरकी हवाको बाहार छोडना उसे उश्वास कहते हैं ।

आतपनाम—इस प्रकृतिके उदयसे स्वयं उष्ण न होनेपर भी दूसरोंको आतप मालुम होते हैं यह प्रकृति ' सूर्य ' के वैमानके जो वादर, पृथ्वीकाय है उनोंके शरीरके पुद्गल है वह

प्रकाश करता है, यद्यपि आग्निस्वायंके शरीर भी उष्ण है परन्तु वह आतप नाम नहीं किन्तु उष्ण स्पर्श नामका उदय है ।

उद्योतनाम—इस प्रकृतिक उदयसे उष्णतागर्हीत-शीतल प्रकृति जैसे चन्द्र गृह नक्षत्र तारोंके घमानके पृथ्वी शरीर है तथा देव और मुनि वैक्रिय करते हैं तब उनोंका शीतल शरीर भी प्रकाश करता है । आगीया-मणि-यापवियों इत्यादिके भी उद्योत नामकर्मका उदय होत है ।

अगुरुलघुनाम—जीम जीवोंके शरीर न भारी हो कि अपनेसे सभाला न जाय, न हलफा हो कि हममें उठ जावे याने परिमाण समुक्त हो शीघ्रता से इलन चलनादि हरेक कार्य कर सके उसे अगुरुलघु नाम कहते हैं ।

जिननाम—जिस प्रकृतिके उदय से जीम तीर्थकर पद को प्राप्त कर केवलवान केवलदर्शनादि ऐश्वर्य समुक्त हो अनेक भव्यात्मावोंका कल्याण करे ।

निर्माणनाम—जिम प्रकृतिके उदय जीवोंके शरीरके अगोपाग अपने अपने स्थानपर व्यवस्थित होते हो जैसे सुतार चित्रगार, पुतलीयोंके अगोपाग यथा स्थान लगाते हैं इमी माफिक यह कर्म प्रकृति भी जीवोंके अयय यथास्थान पर व्यवस्थित बना देती है ।

उपघातनाम—जिम प्रकृतिके उदय जीवोंको अपने ही अयय मे तकलीफों उठानी पड़े जैसे मस नर दो जीमोंअधिक दान्त होठों से बाहार निकल जाना अगुलीयों अधिक

इत्यादि । इन आठ प्रकृतियोंको प्रत्येक प्रकृति कहते हैं अथ व्रसादि दश प्रकृति कहते हैं । -

त्रसनाम—जिस प्रकृतिके उदय त्रसपणा याने वेइन्द्रियादिपणा मीले उमे त्रसनाम कहते हैं ।

त्रादर नाम—जिस प्रकृति के उदय त्रादरपणा याने जिसको छदमस्थ अपने चरमचक्षुसे देख सके यद्यपि त्रादर पृथ्वीकायादि एकेक जीव के शरीर दृष्टिगोचर नहीं होते हैं तद्यपि उन्को त्रादर नाम कर्मोदय होनेसे असख्याते जीवोंके शरीर एकत्र होनेसे दृष्टिगोचर होसक्ते हैं परन्तु सूक्ष्म नाम कर्मोदयवाले असख्यात शरीर एकत्र होनेपर भी चरमचक्षुवालों के दृष्टिगोचर नहीं होते हैं

पर्याप्त नाम—जिस जातिमें जितनि पर्याप्ती पाती हो उन्को पूरण करे उसे पर्याप्तनाम कहते हैं पुद्गल ग्रहन करनेके शक्ति पुद्गलोंको परिणमानेके शक्तिको पर्याप्ति कहते हैं ।

प्रत्येक शरीर नाम—एक शरीरका एक ही स्वामि हो अर्थात् एकेक शरीरमें एकेक जीव हो उसे प्रत्येक नाम कहते हैं । साधारण वनस्पति के सिवाय सब जीवोंके प्रत्येक शरीर है

स्थिर नाम—शरीर के दान्त हड्डी ग्रीवा आदि अत्रय स्थिर मजघुत हो उसे स्थिर नाम कर्म कहते हैं

शुभनाम—नाभी के उपरका शरीरको शुभ कहते हैं

जैसे हस्तादिका स्पर्श होनेसे अप्रीति नहीं है किन्तु पैरोंका स्पर्श होते ही नाराजी आति है ।

सुभाग नाम—कीमीपर भी उपकार कियों विगर ही लोगोंके प्रीतीपात्र होना उमको सुभागनाम कर्म कहते हैं ।
अथवा सौभाग्यपणा सदैव बना रहना युगल मनुष्यवत्

सुस्वर नाम—मधुरस्वर लोगोंको प्रीयहो पचमस्वरवत्

आदेय नाम—जिनोंका वचन सर्व मान्य हो आदर सत्कारसे माने ।

यश कीर्ति नाम—एक देशमें प्रशसा हो उसे कीर्ति कहते हैं और बहुत देशोंमें तारीफ हो उमे यश कहते हैं अथवा दान तप शील पूजा प्रभायनादिसे जो तारीफ होती है उसे कीर्ति कहते हैं और शत्रुओंपर विजय करनेसे यश होता है ।
अथ स्थावरकि दश प्रकृति कहते हैं ।

स्थायर नाम—जिस प्रकृति के उदय स्थिर रहै याने शरदी गरमीसे बच नहींमके उसे स्थायर कहते हैं जैसे पृथ्व्यादि पाच स्थावरपणे में उत्पन्न होना ।

सूक्ष्म नाम—जिस प्रकृति के उदय सूक्ष्म शरीर—जो कि छद्मस्थोंके दृष्टिगोचर होये नहीं कीसीके रोकनेपर रुकावट होवे नहीं सुदके रोकता हुवा पदार्थ रूक नहींसके । जैसे सूक्ष्म पृथ्व्यादि पाच स्थावरपणेमे उत्पन्न होना ।

अपर्याप्ता नाम—जिस जातिमें जितनि पर्याय पाये उनोंसे कम पर्यायवान्धके मर जावे, अथवा पृद्गल ग्रहनमें असमर्थ हो ।

साधारण नाम—अनत जीव एक शरीरके स्वामि हो
अर्थात् एक ही शरीरमें अनत जीव रहते हो कन्दमूलादि

अस्थिर नाम—दान्त हाड कान जीभग्रीवादि शरीरके
अंगयों अस्थिर हो—चपल हो उसे अस्थिर नामकर्म कहते हैं ।

अशुभनाम—नाभीके नीचेका शरीर पैर निगेरे जोकि
दुमरोंके स्पर्श करतेही नाराजी आवे तथा अन्धा कार्य करनेपर
भी नाराजी करे इत्यादि ।

दुर्भागनाम—किसीके पर उपकार करनेपरभी अप्रीय
लगे तथा इष्टवस्तुओंका वियोग होना ।

दुःस्वरनाम—जिस प्रकृतिके उदयसे ऊट, गर्दम जेसा
खराब स्वर होते हैं उसे दुःस्वरनाम कहते हैं ।

अनादेयनाम—जिसका वचन कोइभी न माने याने
आदर करनेयोग्य वचन होनेपर भी कोई आदर न करे ।

अपयशःकीर्तिनाम—जिस कर्मोदयसे दुनियोंमें अपयश
अकीर्ति फैले, याने अच्छे कार्य करनेपरभी दुनियाँ उनोंको
मलाह न देके चुराइयोंही करती रहै इति नामकर्मकी १०३
प्रकृति है ।

(७) गोत्रकर्म—कुभकार जेसे घट बनाते हैं उस्मे उच्च पदार्थ
पृथादि और निच पदार्थ मदीरा भी भरे जाते हैं इसी माफीक

जीव अष्ट मदादि करनेमें निरगोत्र तथा अमदसे उच्च गोत्रादि प्राप्त करते हैं जिसकी दो प्रकृति हैं उच्चगोत्र, निचगोत्र-निस्में इच्छाकुसुम हरिवस चन्द्रवसादि जिम वृत्तके अन्दर धर्म और नीतिका रक्षण कर चौरकालसे प्रमिद्धि प्राप्ति करी हों उच्च कार्य कर्त्तव्य करनेवालोंको उच्च गोत्र कहते हैं और इन्होंसे विप्रीत हो उसे निचगोत्र कहते हैं ।

(८) अन्तरायकर्म जैसे राजाका खजानची-अगर राजा हुकमभी कर दीया हो तों भी वह खजानची इनाम देनेमें त्रिलम्ब करमक्ता है इसी माफीक अन्तराय कर्मोदय दानादि कर नहीं सक्ते हैं तथा धीर्य-पुरुषार्थ कर नहीं सक्ते जीसकि पांच प्रकृति है (१) दानअतराय-जैसे देनेकि वस्तुओं मौजुद हों दान लेनेवाला उच्चम गुणवान पात्र मौजुद हो. दानके फलोंको जानता हो परन्तु दान देनेमें उत्साह न बढे वह दानांतराय कर्मका उदय है

दातार उदार हो दानकी चीजो मौजुद हो थाप याचना करनेमें कुशल हो परन्तु लाभ न हो तथा अनेक प्रकारके व्यापारादिमें प्रयत्न करनेपरभी लाभ न हो उसे लाभान्तराय कहते हैं ।

भोगरने योग्य पदार्थ मौजुद है उस पदार्थोंसे वैराग्य भावभी नहीं है न नफरत आति है परन्तु भोगान्तराय कर्मोदयसे कीसी न कीसी कारणसे भोगव नहीं सक्ते उसे भोगान्तराय कहते हैं जो वस्तु एक दफे भोगमें आति हो असानादि ।

उपभोगान्तराय—जो स्त्रि वस्त्र भूषणादि नारवार भोग-
में श्रापे एसी सामग्री मौजूद हो तथा त्यागवृत्ति भी नहो
आपि उपभोगमें नहीं ली जावे उसे उपभोगान्तराय कहते हैं ।

वीर्यान्तराय—रोग रहीत शरीर बलवान सामर्थ्य होने-
वाला कुच्छभी कार्य न कर सके अर्थात् वीर्य अन्तराय कर्मों-
द्वयमें पुरुषार्थ करनेमें वीर्य-फोरनेमें कायरोंकी माफीक उत्साहा
रहित होते हैं उठना बैठना हलना चलना बोलना लिखना
पढ़ना आदि कार्य करनेमें अममर्ष्य हो वह पुरुषार्थ करनही सकते
हैं उसे वीर्य अन्तरायकर्म कहते हैं इन आठों कर्मोंकी १५८
शक्तिको कठम्य कर फीर दुमरे अक्रमे कर्मबन्धनेका तथा कर्म
नाहनेके हेतु लिरागे उसपर ध्यान दे कर्मबन्धके कारणोंको
छोडनेका प्रयत्न कर पुराणों कर्मोंको छय कर मोक्षपद प्राप्त
करना चाहिये इति

सेवभते सेवभते तमेवसच्चम्



४५ आगमो का सन्निप्त विवरण

— ❁ ❁ —

इग्यारा अगसूत्रों कि सूची

(१) श्री आचारागजी सूत्र श्रुत मन्थ २ अध्यायन
उद्देशा ८५ जिस्मे मुनियों का आचार विचार विनय व्या
मापा एषणा वस्त्रपात्र मकानादि ग्रहन तथा छेकाया जीवों
प्ररूपणा और भगवान् वीर प्रभुका उज्वल जीवन है

(२) श्री सूयगढायागजी सूत्र श्रुत २ अध्याय ०
उद्देशा ३३ जिस्में स्मृत परमत कि प्ररूपणा मोक्षम
उत्कृष्ट मुनिमार्ग, त्रिससर्गत्याग, नरकदु ख, वीरप्रभुकि स्त
च्यार ममासरथ इत्यादि विस्तार है ।

(३) श्री ठाणायगजी सूत्र ठाणा १० उद्देशा २१
बालसे दश बोलोंका मग्रह है जिस्मे च्यारों अनुयोगके अन्दर
निक्षेप गर्मात विविध विषयकी ३२०० चोभगीयोंका निरूपण

(४) श्री समवायागजी सूत्र—जिममें एक मो
कोडाकोड बोलोंका मग्रह है इसमें भी नय निक्षेप अपेक्षा स
द्वाद—अनेकान्त मतका प्रदर्शन और तीर्थकर चक्रवर्ती बल
वासुदेव भूत भविष्य तथा उनोंके मातापिता दीक्षाति
आदि विविध विषयका अच्छा खुलासा है ।

(५) श्री भगवतीनी सूत्र मूल शतक ४१ अ

वर्ग १३८ वर्ग १६ उद्देशा १६२५ जिस्मे गुरु गौतमस्वा-
 मिके पुच्छे हुवे ३६००० प्रश्नोंका उत्तर तथा अन्य महात्मा-
 रिके या अन्य तीर्थीयोंके प्रश्नोंका बडाही असम्कारी उत्तर
 बर्ग च्यारों अनुयोगोंका एक बडाभारी सजाना है ।

(६) श्री ज्ञानार्घर्म कथा सूत्र श्रुत० २ अध्ययन १६
 तथा २०६ जिस्मे पहले श्रुतस्कन्धमें मेघकुमारादि १८ न्यायके
 द्ष्टान्त दे के उनोंकि उपनय मुनियोंपर उत्तारके माधु साध्वी-
 योंको हितशिखा दी गई है दुसरे स्कन्धमें पार्श्वनाथ प्रभुके शामन
 कि २०६ साध्वियोंका शीथिलाचार—सरल स्वभाव—एकावतारी
 होना या द्रोपदि महामतीकि १७ प्रकारकि पूजा बतलाइ है ।

(७) श्री उपाशरु दशाग सूत्र अध्ययन १० जिस्मे
 आनन्दादि दश श्रावकों कि श्रद्धि बत ग्रहन शासन सेवा
 चैत्योपासना परिसह महन प्रतिमा प्रतिपालन स्वर्गगमन
 एकावतारीपणा बतलाया है ।

(८) श्री अतगढ दशागसूत्र वर्ग ८ अध्य० ६०
 जिस्में गौतमकुँमारादि दीक्षा ग्रहन कर घोर तपश्चर्या कर
 अन्त समय श्री शत्रुजय वेभारगिरि आदि तीर्थोंपर अनसन
 कर केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गर्ये उनोंके उज्ज्वल चरित्र है
 अर्जुनमाली देवकीमाताके छे पुत्र श्रीकृष्ण तथा
 प्राठ अग्रमहिषीयों द्वारकादहन श्रीकृष्ण भविष्यमें
 होगा इत्यादि रसीक सबन्ध है ।

१० । श्री अनन्तरोवहना सूत्र—वर्ग ३ अध्य० ३३

रणा, समुद्रघात, इत्यादि द्रव्यानिर्माणका विधाना है.

द्विधा, कर्म, आहार, उद्योग, सञ्ज्ञा, सधाति, वेदना, प्रचा-
युगा, लोदया, दृष्टि, कायास्विति, अन्विकथा, शरीरवर्णनादिना,
सञ्ज्ञा, यौनि, यमोच्यते, माया, शरीर, प्राणायाम, कथाय, इतिरेव,
स्थान, अन्वयवर्द्धन, स्विति, पशु, उद्यात, चवन, आसिञ्जसि,
श्रीपञ्चमस्तोत्रे संतपते इति स्मि. लोचनीक (४)

वया राजधानि इत्यादि

का वयुन सन्तपते इति स्मि. लोचनीक (३)
पदादु-उच्यते लोचनीक का वयुन असन्वयति द्विपञ्चमिदं
श्री लोचनीकस्तोत्रे संतपते इति स्मि. लोचनीक (३)

प्रकारका वाक्ये प्रयुक्त इत्यादि.

फल किं वा है इति वाक्ये लोचनीकस्तोत्रे वयुन इति
इति श्री लोचनीकस्तोत्रे किं वा प्रकारे लोचनीकस्तोत्रे लोचनीक
का उच्यते प्रत्ये श्री लोचनीकस्तोत्रे. यत् सिद्धि वा हेव
श्री लोचनीकस्तोत्रे लोचनीकस्तोत्रे, लोचनीकस्तोत्रे, लोचनीकस्तोत्रे
श्री लोचनीकस्तोत्रे संतपते इति स्मि. लोचनीकस्तोत्रे (२)

इत्यादि यत् संतपते वयुनिक है.

सन्तपते मन्त्रान्तरं किं वा प्रत्ये-अन्वय आकाशिकप्रकार
इति वा-इति वा-इति वा-इति वा-इति वा-इति वा-इति वा-इति वा-
अविद्यया प्रविष्टा समुत्सराणि मुनि आगमन मुनिगण प्रत्ये
विद्या-शरीरि माहिलोचनीक कला, लोचनीक वयुन लोचनीकस्तोत्रे
श्री लोचनीकस्तोत्रे लोचनीकस्तोत्रे प्रथम सूत्रे इति अर्थोपादान

जिस्में ३३ मुनियोंकी दीक्षा उग्र तपश्चर्या जिस्में भी धन्नामुनि कि तपश्चर्या और उनोंके शरीरका विशेष वर्णन बडाही अथा-
र्यकारी है सर्व अनुतर वैमानोंके सुखोंका अनुभव कर मनुष्य
हो मोक्ष जावेगे

(१०) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र शु० २ अध्या० १०
जिस्में पांच आश्रव द्वारमें जीव हिंस्या करना, भूठ बोलना,
चौरी करना, मैथुन सेवना, परिग्रह कि ममत्त्व बढाना इसका
फल नरकमें जाना अनेक जन्म मरणादि सप्तारमें परिभ्रमन
करना और अहिंसा सत्य अदत्त ब्रह्मचर्य भ्रममत्त्व वह पांच
सत्त्वद्वारके फल यावत् मोक्ष-व्याकरणादि पढके सूत्र वाचना
ब्रह्मचर्य कि ३२ ओपमा इत्यादि ।

(११) श्री विपाकसूत्र-मुत्स्कन्ध २ अध्या० २०
जिस्में मृगादि दश० जीवोंके पूर्वभवोंके दुष्कर्म-पापाचरणों
के फल दु खोंका अनुभव और सुबाहुकुंमरादि दश जीवोंके
पूर्व भवोंमें पुण्याचरणा दानमहात्म्यका सविस्तार वर्णन है इन
सूत्र के श्रवण करनेसे सप्तार दशाका ठीक अनुभव हो
सक्ता है ।

वारहा उपाग सूत्रोंके सूची

(१) श्री उववाहजी सूत्र-जिस्में चम्पानगरी के वर्णनमें
बडे बडे आकारवाले सिखरबन्ध जिनमन्दिरों से सुशोभित-नगरी
है तथा पूर्णमद्रोद्यान पूर्णमद्र यक्षका मन्दिर आशोकवृक्ष पृथ्वी

(५) श्री जम्बुद्विप पद्मति सूत्र—जिस्मे तीर्थकर चक्र-
 र्त, छे आरा, जम्बुद्विपमें भरतादि घेन, चुलहेमवन्तादि
 परेत गगादि नदी, टुक विजय तीर्थ श्रेणि आदि दश द्वारोंसे
 जम्बुद्विपका वर्णन है और ज्योतीषियोंका मक्षेपसे वर्णन है ।

(६) श्री चन्द्रपद्मति सूत्र पाहुड़ा २० जिस्मे चन्द्र सूर्य
 गृह नक्षत्र तारोंका वर्णन है ज्योतिषियों के मडला चाली कुला
 उपकुला नक्षत्र नक्षत्रों के तारा-सस्थान नक्षत्रों के देव अलग
 अलग नक्षत्रोंका भोजन कार्यकि मिद्धि इत्यादि.

(७) श्री सूर्यपद्मति सूत्र पाहुड़ा २० जिस्मे सूर्य,
 सूर्य के मडले चाली नक्षत्र गृह-शुभाशुभ नक्षत्रों के देवता
 उनों के भोजन जिनोंसे कार्य की सिद्धि अर्थात् अमुक नक्षत्र
 के दिन अमुक ध्यान करनेसे अमुक कार्य कि सिद्धि होती है
 इसकी विधिका वर्णन है । ज्योतिषियों का वर्णन मरि-
 स्तार है ।

(८) श्री निरियात्रलिका सूत्र अर्ध १० जिसमें श्रेणिक
 राजा के काली आदि दश कुँमरों के अन्तरगत फोणक राजा
 बहल कुँमर के हार हाथी का विवादमें चेटक राजा और
 फोणक राजा का घडा भारी सग्राम का वर्णन है

(९) श्री कप्पवडासिया सूत्र अर्ध १० जिस्मे कालि
 आदि दश भाइयों के पद्मादि दश पुत्रोंने दीक्षा ग्रहन कर
 स्वर्गगमन कियों का वर्णन है

(१०) श्री पुष्पयाजी सूत्र अध्या० १० जिस्में चन्द्र सूर्य शुक्रादि दश देव देवी भगवानको वन्दन करनेको आये ३२ प्रकारका नाटक किया सोमल ब्रह्मणके प्रश्नादि जिनोके पूर्व भयका वर्णन एकावतारी यावत् मोक्षमें जावेंगे ।

(११) श्री पुष्पचलिया सूत्र अध्या० १० जिस्में श्री-देवी आदि १० देवीयों भगवानको वन्दन करनेको आइ ३२ प्रकारका नाटक भक्ति करी जिनोका पूर्व भयका वर्णन है ।

(१२) श्री त्रिन्हीदशा सूत्र अध्या० १२ जिस्में द्वारा-मति नगरी श्रीकृष्ण नरेश-बलदेवराजा-धारणी राणीके निषेधादि १२ राजकुंमरोकी दीक्षा वर्णन है ।

दश पयन्ना सूत्रों कि सूची

(१) चउसरण पयन्ना (२) मथार पयन्ना (३) भक्त पयन्ना (४) आउरपच्चरकाण पयन्ना (५) महापच्चरकाण पयन्ना इन पाचों पयन्ना सूत्रोंमें आलोचना प्रतविशुद्धि भाक्तपाणीका त्याग अन्त ममय प्रत्याख्यान भावनाविशुद्धि, कषाय शीतलता आत्मभावना अनित्यभाषना अमरणभावना आराधिकभाषना एकत्वापणा कि भावना इत्यादि वर्णन है

(६) ज्योतिष कराड पयन्ना (७) गणी विभक्तिय पयन्ना इन दोय पयन्नोंमें ज्योतिषीयोकि विषयका सविस्तार वर्णन है ।

आयकोंके आररय करने योग्य प्रतिक्रमण सूत्र है. इनमें सबन्ध रखनेवाले अन्य विषय भी बहुत हैं ।

(२) श्री उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय ३६ जिस्में विविध विषय वैराग्यमय तथा ब्रह्मचर्य कि नौ चाड मोक्षमार्ग अष्टप्रवचन साधु समाचारि कपिलमुनि हररुर्गामुनि मयति-मृगा पुत्र अनाधी ममुदयालादि और भी उच्चकोटीका मुनि मार्ग पटद्रव्य, नयतच्च रुमेलग्या जीवादिका प्रतिपादन अन्धा कीया है ।

(३) श्री टशवैकालिक सूत्र अध्याय १ जिस्में मुनि योंके आचार व्यवहार तथा मित्राश्रुति आदिका वर्णन है ।

(४) श्री शोधनियुक्ति सूत्र-जिस्में विविध विषय हैं मुनियोंको पात्रे कीतने प्रमाणवाले दढा - चदर चोलपटा उत्तरपटा आदि मयका प्रमाण है तथा आहार विहार आदिका विस्तारमें वर्णन है । एव ११-१२-१०-६-४ मीलके ४३

(४४) श्री नन्दीनी सूत्र जिस्में पाचज्ञानका सति स्तार वर्णन है श्रुतज्ञानाधिकारें द्वादशांगीमें ले के ७३ आगम और प्रकराणदिका मविस्तार वर्णन कीया है ।

(४५) श्री अनुयागद्वार सूत्र जिस्में नय निक्षेप द्रव्य प्रमाण सामान्य निराप अणुपूर्वी अनानुपूर्वी पच्छाणुपूर्वी छे भाव मात म्वर-तीन ग्राम इकरीम मुर्च्छना छे दोष आठ गुण याने मगीत विषयका अन्धा विवरण कीया है

इन पैतालीस आगमोंपर पूर्वाचार्योंने बडेई विस्तारसे निर्घुक्ति टीका चूर्णी भाष्य वृत्ति अत्रचूरी द्वाया टीपण और बालबोध रचके जन समानर बडा भारी उपकार कीया है विशेष जैनागमोंमें निर्तोधर्म, गृहस्थधर्म, सदाचार, व्यवहार-शुद्धि, ७२ कलाओं, १४ रत्न, च्यार भावना, अहिंसादि धर्मके माथ सम्यक्त्वधारी राजा महाराजा सेठ सेनापतियों ने जिनमन्दिर-तीर्थोंका निर्णोद्धार-जिनप्रतिमा पूजा शासन प्रभावना शासनोन्नति करी जिस्का वर्णन जैन श्रावक लोगोंने मन्दिर बनाया प्रभु पूजा प्रभावना थिक प्रतिक्रमण पौषद प्रतिमा धारण करी का वर्णन धुनियों तप सयम ज्ञान ध्यानमे आत्मरुल्याण कीय वर्णन है विशेष सुलामा तयही हो सके कि गीता अपने शिष्योंको आगमों कि वाचना दे तथा श्रावक तार्थ गुरु महाराजों कि सेवा भक्ति कर सुत्र सुने जो जन्म धारण कर जैन सिद्धान्तोंका आग्रोपान्त श्रवण^{व्यवस्था} कीया है वह मानों अपना अमून्य मनुष्य जन्मकों नि ही खोके चला गया है "सुययणस्म दुलहा" आरुहा है कि सुत्ररत्न मीलना दुर्लभ है

सौचा जणइ कलाण, सौचा जणइ पात्रय ।

उभयपि जणइ सौचा, ज मय त समाचरे ॥ १ ॥

सेवभते सेवभते तमेवसच्चम् ।

❀ खुश खबर. ❀

—❀❀❀—

पुत्र) द्रव्यानुयोग द्वितीय प्रयोगिका वि = १०० तदनाछा
 मार्ग रु १०) ५०० नकलाकारु ४५) १००० नकला(रु ८ =)
 अच्छा खेवाचुलिम्ब तथा वगुनिरा रुि =) १० ना
 (वा रु १०)

योंके आचप्रकरण तथा स्तवन सग्रह भाग ४ वा भेद
 (४५५ सूत्रोंका हिन्दी भाषान्तर. रु ४)

मुनियोंको बोध भाग १० पुस्तकोंकि रु ३)
 उत्तरपटा
 विस्तारमे न्दी मेभारनामा रु ०॥

- (
 स्तार नय
 और प्र
- १ पत्ता—श्री जैन युवक मित्रमडल
 मु लॉहाट—(मारवाट)
 - २ श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानगुप्पमाला
 मु० फणोशी—(मारवाट)

1

2

3

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि ग्रथमाळा ग्रन्थांक ८७.

जैन धार्मिक शंकासमाधान.

अधिका, गान्धर्विशारद योगनिष्ठ जैनार्थार्थ
श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि.

शा. केशवनाथ शिवनाथ मन्जुनाथ भातीज्याणानी द्रव्य सदायथी
छपानी प्रसिद्ध जगन्नाथ
श्री अक्षयात्मजानप्रसादक भ. डण.
दा. नडील भाडुनवाच लामथर सु. पादना.

प्रथमागति	* *	प्रति १०००
रीर स २४५०	र म १८२५	री म १८८१

दि. ०-२-०.

અમદાવાદ.

દી "કાયમત જ્યુનિસિ" પ્રિન્ટિંગ પ્રેસમાં
પરીખ દેવીદાસ હગનનાને છાપ્યું

निवेदन



श्री अध्यात्मज्ञान प्रभाङ्क मङ्गल तरङ्गी प्रकृत यती श्रीम-
 मुद्दिभाग्ग अरिअथभाणाना अथाङ्क ८७ तरीङ्ग श्री नैनवर्म सदा
 मभाधान नामनेो अथ प्रष्ट वृता अमेने धखो आनद थाय छे
 श्री शामनदेव धटाकलु वीरना म मधमा स १८८० नी मायभा डेव
 उवासुओ तरङ्गी रामओभरी अर्थो थोवी ज्ञाणी अने तेवाओने
 मय हपीकत उपयोगी धध परे ओवा हेतुथी गुडथीओ आ अथ सपी
 मभाजने आ निययनु उपयोगी माहित्य पू पाउथु ठे

आ मङ्गल पत्रे को प्रभाङ्गु अध्यापीकड नथी. आ पलु आ
 मङ्गलना अविगना प्रातस्मरणीय गुडमहागण श्रीम मुद्दिभाग्ग
 अरिअथनी पूरुषु कृपाधी अने जानउपी नैनवर्म मधुओनी डि १२ महायथी
 मङ्गल पोताना आनु नियम प्रभाणे वितभोतम पुस्तके मन्ती अभने
 अमिद्ध करे जय छे मङ्गलना आ गुन मयभा नेम नेम अबिक
 अहाय मणगे तेम नेम मङ्गल पोतानु मम वधु विमादधी अनावगे
 आना प्रकारना माहित्यनी आपणुमा धखी ओठप ठे ने आग्रा छे के
 आ अथनेो महेणा प्रभाणुमा यान लठ अन्त्याओ पोताना आत्मन्त्याथु
 साथे मत्य वस्तुनी प्रतीति श्री नकगे ओरी आग्रा राभवामा आवे छे

शु पादर, १८१ } अध्यात्मज्ञान प्रचार- मङ्गल तरङ्गी,
 वमतपत्रमी } वशील मोहनसाह हीमचद.

ધન્યવાદ.

૨૥ નવ ડાહ્યામા પ્રતીજ્ઞવાણા ઝેડ કેશવનાન શિવભાષ
નમનાને ૩ ૭૪) ની અર્થિકગાર આ લી પોતાના દ્ર ર્નો સુપ્રોમ
કરો છે આ માટે શ્રી આચ્યા મ જ્ઞાનપ્રસાદક મહત્ત તરફથી તેમનો ધ મવા
માનવાની સાથે આભાર માનવામા આવે છે

—અ ડા. પ્ર. મહા.

પ્રસ્તાવના.



વિ ૨ ૧૯૮૦ મા ને ને હો એ જનધર્મશાસ્ત્રોના મત ના સમર્થી વિચારો દશા યા હતા તેઓના શક્તિ વિચારાની અમરથી અ ય જનો મુક્ત રહે એવા ઉદ્દેશથી જનધાર્મિક રાકાસમાધાન ત્ર ય પેથાનરમા તેજ એમામામા આનજ માસમા લખી પૂર્ણ કૃતો આ યયમા ને કઇ ઉત્તર તરીકે લખ્યુ છે તે જનશાસ્ત્રોના આવારે લખના છતા ઉદ્દરથ દશાથી અનુપયોગે જિનાયા વિરુદ્ધ ને ઘલખાયુ ટાય તેની સમમક્કા માગી માયુ છુ અને તેને સુનારવા જનગીનારોને વિનયપૂર્વક પ્રાર્થના કુ છુ હાયમા અને ધમોમા મદાન્તિયુગ પ્રવવ છે દેગ મમાજ વગેરેમા આવ્યારો વિચારો સખધી સદાન્તિયુગ ચાને છે અગ્નિચર પ્રસાવાળા તથા અપવમનુપોને ગીનાર્યઠાનીઓના સમાગમના અમાવે તેમજ જનશાસ્ત્રોના અધ્યામના અમાવે અને જનનો શમઓ પડે એમા આશ્રય નથી તેથી તેઓને ત્ર યરૂપે પ્રલુત્તર આપના અ ય જનો કે ને મલકાહી છે તેઓને આના ત્ર યોથી સમકિતની નિમનના રહે એવુ જાણીને મે માગી ધર્મ અગ્નની છે અને તેથી પ્રતિપક્ષી વિચાર વાળાઓને તે ન રૂએ અને તે મારી નિદા ઠગે તોપણ મને તો તેઓપર સમમાન બાવ યા ટોવાથી કમની નિર્ગંગપન આ મનુદ્ધિ થવાની છે અને બવિધ્યમા પણુ અને ત્યાસુધી પુન શમઓના જવાય તરીકે જનધર્મ અને જનમનની નિમમમાને મેમા કરવાની નિપામ પ્રદત્તિ ચાનુ રહેવાનીજ આના સદાન્તિયુગમા માગી ફરજ માગ અગ્નની ને એ તેમા પ્રતિપક્ષી નિદમ તરફથી ઉપમગ થાય તોપણ મારે તેઓની નિદા કર્યા વિના તેઓનું બૂર ધરવાની વિચાર પ્રગ્તિ વિના મારૂ મર્થ કગવાનુજ રથુ પ્રતિપક્ષી નિદમોપર મને જાન યા અને મમબાવ વને છે તેથી

આરા કમરોગીઓના કારોથી આત્માની શુદ્ધિ યાવ છે પેથાપુરના
 જૈનસરે ચોમાસામા ગુરુમકિલ સારી કરી હતી શા મોલિનામ પાનાચક
 તથા શા રમણિકનાન કામામણમે પ્રુદ્ ગોવવામા સહાય કરી છે આ
 અ યથી જૈનો જૈનધર્મમા શ્રદ્ધાવાનુ ગદો એમ ઈચ્છુ છુ પ્રતિષ્ઠી
 નિ મારે ઠુ ખમાતુ છુ અને તેઓનું બલુ ઈચ્છુ છુ તેઓપર દ્રેષ વિના
 તેઓપર શુદ્ધ પ્રેમથી મનીમાન ધારુ છુ અને આશા છે કે તેઓ માર
 લખેનુ સમજને તેમાથી સત્યમદન્ય કરે અમર વગ્ગાવ તજ મધ્યગ્ય
 બને અને આત્મશુદ્ધિ કરે

આ અ યનુ અશુદ્ધિ શુદ્ધિપતક કરનાની ઉપોમિના બાણુવ નથી
 હતા જે કઇ ટાંપિ વગેરે અદુર શાન્દહોવા ગ્વી ગવા હોય તેઓને
 સનો સુધારગે

સ્ત્રવેષ્ઠ ઝઞ્ઞ મહાવીરશાન્તિ રૂમુ મુડી વિ૦ ૧૫૮૧ પેટા વાં ૭



श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडल तरुथी

श्रीमद् बुद्धिमागरसुरिश्चग्रन्थभाषाभा

प्रकट थयेला ग्रन्था.

अंथांक	पृष्ठ	किंमत.
१. ६ लज्जन सग्रह लाग १ यो	२००	०-८-०
१ अध्यात्म व्याख्यानभाषा	२०६	०-४-०
२ लज्जनसग्रह लाग २ जे	२०९	०-८-०
३ लज्जनसग्रह लाग ३ जे	२१५	०-८-०
४ समाधिशतकम्	६१२	०-८-०
५ अनुलनपञ्चिणी	२४८	०-८-०
६ आत्मप्रदीप	३१६	०-८-०
७ लज्जनमग्रह लाग ४ यो	३०४	०-८-०
८ परमात्मदर्शन,	४००	०-१२-०
९ परमात्मव्योति	५००	०-१२-०
१० तत्त्वमिदु	५००	०-१०-०
११ गुणानुराग (आहृति जीञ्च)	२४	०-१-०
१२-१३ लज्जनमग्रह लाग ५ यो		
तथा जानदीपन	१६०	०-६-०
१४ तीर्थयात्रातुं विमान (आ जीञ्च)	६४	०-२-०
१५ अध्यात्मलज्जनमग्रह	१६०	०-६-०
१६ गुरुभोध	१७८	०-८-०
१७ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०-६-०
१८ गृहलीमग्रह ला १	११२	०-३-०

૧૧-૨૦	આવન્યર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧-૨ (આટલિ ત્રીજી)		૪૦-૪૦-૧-૦-૦
૨૧	ભગ્વતપ મગ્દ ભાગ ૬ ઠો	૨૦૮	૦-૧૨-૦
૨૨	વચનામૃત	૮૩૦	૦-૧૪-૦
૨૩	યોગદીપક	૩૦૮	૦-૧૪-૦
૨૪	જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા	૪૦૮	૧-૦-૦
૨૫	આન દધનપ ભાગાર્થ (૧૦૮) સમ્રદ	૮૦૮	૨-૦-૦
૨૬	અધ્યાત્મશાંતિ (આ ળીજી)	૧૩૨	૦-૩-૦
૨૭	કાવ્યમગ્દ ભાગ ૭ મો	૧૫૬	૦-૮-૦
૨૮	જૈનધર્મની પ્રાચીન અને અર્વાચીન સ્થિતિ	૬૬	૦-૨-૦
૨૯	કુમારમાળ (દિગી)	૨૮૭	૦-૬-૦
૩૦	થી ૪-૫૪ સુખમાગર ગુરુગીતા	૩૦૦	૦-૪-૦
૩૫	મુદ્ર-વ્યસિચાર	૨૪૦	૦-૪-૦
૩૬	વિગ્નપુરગ્ધાત	૯૦	૦-૪-૦
૩૭	માતરમતીમન્ય	૧૮૬	૦-૬-૦
૩૮	પ્રતિજાપાન	૧૧	૦-૫-૦
૩૯-૪૦-૪૧	જૈનગ-૭મનપ્રમધ સધરગતિ જૈનગીતા	૩૦૪	૧-૦-૦
૪૨	જૈનધાતુનિમા લેખમગ્દ ભા ૧		૧-૦-૦
૪૩	મિત્રમૈત્રી		૦-૮-૦
૪૪	શિષ્યોપનિષદ્	૪૮	૦-૨-૦
૪૫	જૈનોપનિ	૪૮	૦-૨-૦

४६-४७ धार्मिक गद्यमञ्जरी तथा सद्गुणेश भाग १ को	६७६	५-०-०
४८ लज्जनसंज्ञक भा ८	६७६	३-०-०
४९ श्रीमद् देवयद्र भा १	१०२८	२-०-०
५० कर्मयोग	१०१२	३-०-०
५१ आत्मतत्त्वदर्शन	११०	०-१०-०
५२ भारतसङ्कारशिक्षण कान्य	१६८	०-१०-०
५३ श्रीमद् देवयद्र भा २	१०००	३-८-०
५४ गार्हपत्य मञ्जरी भा २	१३०	०-४-०
५५ कर्मप्रकृतिगीताभाषान्त	८००	३-०-०
५६ सुतगीत सुदृषीसञ्ज्ञक	१६०	०-१५-०
५७-५८ आगमसाग ओ अध्यात्मगीता	४७०	०-१-०
५९ देवदत्त भुक्ति मत्तन मञ्जरी	१७५	०-४-०
६० पूजसंज्ञक भा १ को	४१६	१-०-०
६१ लज्जनपञ्चमञ्जरी भा ६	५८०	१-८-०
६२ लज्जनपञ्चमञ्जरी भा १०	२००	१-०-०
६३ पत्रसद्गुणेश भा २	५७५	१-८-०
६४ धातुप्रतिभाषण सङ्घ भा २	१८०	१-०-०
६५ नैनदृष्टिमे धरानान्योपनिषद् भाषार्थविवेचन	५६०	१-०-०
६६ पूजसंज्ञक भा १-२	६००	२-०-०
६७ स्नानपूजा (सुद्धिसागम्प्रकृत)		०-२-०
६८ श्रीमद् देवयद्रञ्च अने तेमनु अपनयन	३०	०-४-०

१६-७२ शुद्धोपदेश मञ्जूषा वि०		
संस्कृत अथ ४		
७३-७७ सधर्मन्याय वि०	१८०	०-१२-०
संस्कृत अथ ५		
७८ आनातपनराय ओ लैलधर्म	१६८	०-१२-०
७९ मित्ताभक्ति	१००	०-४-०
८०-८१ लैलधर्म ओ श्रीमिधर्मनो	१२०	०-४-०
मुद्राणनो तथा लैल श्रीमिधर्मनो	२२०	
८२ तत्त्वस्वरूप	२००	१-०-०
८३ ध्यानविचार	६६	०-१२-०
८४ आत्मसमिप्राभार	१४०	१०-८-०
८५ शमापना	७५	०-४-०
८६ आत्मदर्शन	१५५	०-३-०
८७ लैल धार्मिक समाधान	५५	०-४-०
८८ = पापिकयनिर्घ	३२०	०-२-०
८९ आत्मविशुद्धाभारनाप्रभार	१००	०-८-०
९० आत्मप्रकाश		०-४-०
९१ शोभविनाशः (उज्ज्वली)		
९२ तत्त्वविचार		
९३ अध्यात्म गीता		
९४ आत्मसमाधिस्तम्भ		
९५ उरुप्रमोक्ष		
९६ आत्मस्वरूप		
९७ परमात्मदर्शन		
९८ लैलस्वरुमा मूर्तिद्वय		

मञ्जूषा अथो

ઘોડા માસમા બહાર પડનાર ગ્રન્થો.

- ૧ જૈન શ્વેતાચર ગ્રંથનામાવલિ
- ૨ શ્રીમદ્ દેવચક્ર નિવાણ રામ
- ૩ મોહુ વિગ્નપુર વૃત્તાત
- ૪ ઉ૦ શ્રી યશોવિજયજી નિગમ
- ૫ ભજનગ્રંથ ભા ૧૧ મો

* આ નિશાનીનાળા ગ્રંથો રીનક નથી

પુસ્તકો મળવાના ઠેકાણા —

- ૧ વકીલશા મોહનલાલ હીમચંદ પાદરા, (ગુજરાત)
 - ૨ શા આત્મારામ ખેમચંદ સાબુદ (જીલ્લો અમદાવાદ)
 - ૩ ભાખરીઆ શા મોહનલાલ નગીનદાસ ૧૯૨-૯૪,
બગરગેટ કોટ—મુબઇ.
 - ૪ શેઠ નગીનદાસ નયચંદ ભાખરીઆ મહેસાણા.
 - ૫ શેઠ ચંદુલાલ ગોકળદાસ, વિગ્નપુર જૈનશાનમ નિર
 - ૬ જુકસેલ ગ્રંથજી હીજી પાવધુની—મુબઇ.
 - ૭ શા. રતિલાલ કેશવલાલ, મુ. પ્રાતીજ.
 - ૮ શ્રીમદ્ જુહિસાગરચરિ મડળ, મુ. પેથાપુર
- માગગ-૭ ઉપાચય



જૈનધર્મ શંકા સમાધાન.

શ્રી જૈનશાસનદેવ ઘંટાકર્ણુ વીરની
સહાયસિદ્ધિ આદિ માન્યતા.

પ્રણમ્ય શ્રીમહાવીર, સર્વશ્ચ દોષવર્જિતમ્

કુમત્ત ચણ્ડન કુર્ષે, જૈનશાસ્ત્રવિરોધિનામ્-॥ ૧ ॥

ઘણ્ટાકર્ણમહાવીરો જૈનશાસનરક્ષક

તમ્ય સહાયસિદ્ધયર્થ, ઘચ્ચિમ્ શાસ્ત્રાનુસારત્ ॥ ૨ ॥

શ્રી મનુષ્ય દોષવર્જિત એવીશમા તીર્થંકર તારણુદાર એના મહાવીર
દેવને નમસ્કાર કરીને જૈનશાસ્ત્રોના વિરોધીઓ કે જેઓ ચારનિકાપના
દેવોની મહામતાને માનતા નથી વગેરે જૈનશાસ્ત્ર વિરુદ્ધ અને કુમતને
ધારે છે એવાઓના કુમતનુ ખડન કર છુ ઘટા કર્ણુ મહાવીર છે તે માન
વીર પેળી એ વીર છે તે જૈનશાસન રક્ષકી છે, તે જૈનધર્મમા
ત્રાનુ એના જોને સહાય કરી શકે છે તેથી શાસનદેવની સહાયની
સિદ્ધિને શાસ્ત્રાધારે ક્યુ છુ

જૈનશાસ્ત્રોમા પરપરાગમનુ વચ્ચુન છે પુન જૈનાચાર્યોની પરપ એ
ને માન્યતાઓ પ્રવર્તે છે તેનો પરપરાગમના સમાવેશ થાય છે મવ
ગતના હિદુ મુસલમાન, જૈન વગેરે ધર્મોમા પચુ તેઓ તેઓના મહા
માઓના પરપરાગમોને માને છે જૈનશાસ્ત્રોમા પરપરાગમ છે તેને જો
ન માનવામાં આવે તો જૈનધર્મની ઘણી માન્યતાઓનો નાશ થઈ
ગય પૂર્વાચાર્યોએ મનપ્રવાદપૂનમાથી અનેકમત્રોનો અને વિધા

એનો ઉદ્ધાર કરી મત્સ્યપુત્રને તી રચના કરી છે. મત્સ્ય પુત્ર
 વિશાખા પુત્રના મત્સ્યપુત્રને પૂર્વમાં એ અનેક દેવોના મત્સ્યો મના
 વ્યા છે અને તેથી તેમને અનેક મત્સ્ય પે રચ્યા છે. તારમાં જૈનગા
 શ્રોમા નવારે મત્સ્ય અને પ્રમરના મૌહુદ છે ઉવમગ્ગર મત્સ્યો
 પમ્ પમ તાન મૌહુ છે નાની શાનિનો મત્સ્ય પમ્ પમ્ મૌહુદ છે
 નાની શાનિનો મત્સ્ય પ છે મનિરરનો મત્સ્ય પ છે નિગ્ધપદ્મ નમિ
 ઉમ્ અને ભમ્મામગ્ગો મત્સ્ય પમ્ પમ્ મૌહુદ છે મૌનાવર અને
 મિગર જેનો ન તે ક્રમિમકન મત્સ્ય પો માને છે જૈનગાનો સરિ
 મત્સ્યની આરાધના કરે છે અને સરિમત્સ્યના મત્સ્યને પૂજે છે ઉપાધ્યો
 વરમાનનિગ્ધાની આરાધના કરે છે આરકો સરિમત્સ્ય મત્સ્યની આગ
 ધના કરે છે અ ટોનરી શાનિન્નાન અને લપુશાનિત્સનાન કે જેની
 રચના તપામ છના આચ્યોએ મૌહુરવિગ્ધપસરિના સમયમા કરી છે અને
 રીમકન્ય ૨ ઉપાધ્યાય કે જે સત્તરબેદી પૂજત, બાને ભારના અને
 પ્રતિષ્ઠાપ્દ્ય ધ્યાનદીપિમ આદિ મ યોના સ્મરિતા છે તેમને પ્રતિષ્ઠા
 પ્દ્યમા પદાકર્ણ મત્સ્યને મનો છે તે પૂવપરપતથી જ્ઞાનુ તથા અ મ
 તેમના મુઓ જગમ્ ૨૨થી હીરવિગ્ધપસરિ વગેરેના સમયમા શાનિન્નાન
 -અષ્ટોત્તરી રનાત્રની રચનાની વ્યવસ્થા થઈ છે અને તેમા નવમદ
 પૂજન, હરિકૃપાનપૂજન ચેનીશતીયકરોની પદ્મપદ્મિણીઓના મત્સ્ય તથા
 તેઓનું પૂજન છે અને નવથકાગ્નિને નેવેલ ધરવા વગેરેની વ્યાખ્યા છે

* જુઓ પદાકર્ણકથા—પારસુના ત્રીજા નવારના જગદારમાં મા
 કૌશલીયાવાસાની આરતી શેરીનો જગદાર સા હાલાભાઈની જેમરેખમા છે
 તેમો તથા પુનાગિન ઠારેજતા (મિ સો ના જનકર્ણ) તથા સુવર જૈન
 અવર પુસ્તકાલપના લીધમાં નવાર પદ્મ-પદ્મ પુર્વાચારિના લખેલા
 તેવાર પદ્મ છે તપામગ્ધમા દરેક પ્રતિષ્ઠામાં પદાકર્ણ વત્સ રચાપવામાં
 આવે છે

અને પ્રતિષ્ઠા મત્રપ્રમા ઘટાકર્ણુવીરની મન યત્રવાળી થાવી અને તેને સુખડી ધરાવવાની નિધિતી પ્રક્રિયા આજસુધી તપાગચ્છ જૈનોમા પ્રવર્ત છે અમારા પૂર્વાચાર્યોએ, મુનિનરાએ, પ્રનિગમ્પમા ઘટાકર્ણુવીરની સદા યતા-માન્યનાને સ્વીકારેલી છે, તેથી અમે પણ અમારા પૂર્વાચાર્યોના પરપરાગમને મા ય કરીને ઘટાકર્ણુવીરને શામનદેવવીર તરીકે માનીને છીએ અને મહુડીના મધે ઘટાકર્ણુવીરની મૂર્તિ બનાવી અને અમેએ તેની પ્રતિગ મ્ત્રી છે જૈનશાસ્ત્રોમા જૈનોના રોજ મસ્કારના મત્રો છે તે મત્રપ્રવા નામના પૂર્વમાથી ઉદ્ધૃત મ્ત્ર છે અને તેઓનો નિગમ શાસ્ત્રોમા સમાવેશ થાય છે અનાલ્લિતથી દરેક તીર્થકરના વખતમા માધુઓના આચારના અને તત્ત્વજ્ઞાનમય આગમ શાસ્ત્રો અને ચક્ર પૂર્વના મનાઈ ભાગના તથા ગૃહ્ય ધર્મના મસ્કાર આદિ ધર્મપ્રપ્તનાર નિ ગમશાસ્ત્રો પ્રવર્ત્યા કરે છે અને જૈનો તે બનેને પ્રમાણુદત માને છે શ્રીસપ્તદેવપ્રજ્ઞના વખતમા ભરતરામએ જે ચાર વેદો રચ્યા હતા તેઓનો નિગમશાસ્ત્રોમા સમાવેશ થાય છે અને મત્રપ્રવામાથી અને વિગ્ત પ્રવા માથી ઉદ્ધૃતમત્રો તથા પૂર્વાચાર્યોએ દેવોને પ્રત્યક્ષ કરી જે મત્રો કવો રચ્યા છે તે સર્વમત્રશાસ્ત્રોનો પણ અપેક્ષાએ નિગમશાસ્ત્રોમા સમાવેશ થાય છે તેથી તે મત્રમાગ અધિમરીની આગળ ગુરુઓ પ્રકાશિત કરે છે તેથી ગુરુપરપરાગમે ચાક્રો આવે છે, તેની હાન તે પર પરાગમમા મમાવેશ પામે છે જૈનાચાર્યો મિથ્યાત્વીદેવોને પણ સમકિતી બનાવે છે અને તેઓને જૈનશાસન ગચ્છના રક્ષક તરીકે નીમી રાકે છે તંતુ જય માત્રામ્પમા શત્રુજય પર સ્થાપિત મ્પર્દી યક્ષ મિથ્યાત્વી યદ્ય ગમે હોતો તેને વજ્રવામીએ ઉપડી મૂકી અને બીજા ક્ષર્દી યક્ષને બો નાની જૈનધર્મનો શ્રદ્ધાતુ સમકિતી બનાવી શત્રુજયપર સ્થાપિત મ્પર્દો છે શ્રી આનંદવિમન સરિએ શ્રી મહાશિભદ્રવીરની સ્થાપના મ્ત્રી છે અને

તેની સ્થાપના પાન ડુર પામેના મગરવાડમાં તથા વિગ્નપુર પામેના આગરોડ ગામમાં છે માણિમદ્રવીરનું આગરોડમાં ગામ બદાર મોટું દેવગ છે તેનું વિગ્નપુર તાલુકામાં સવિખર વખત છે

પરશ્યાઓએ તપ તપી મન આરાધી નીન માણિમદ્રવીર વગેરેને પદ મનમ્બી મરી જૈનશામન દેવતરીકે સ્થાપિત કર્યાં છે તેથી જૈન શામ પરપગમને માય રામી નીનશામન રમદવીર વગેરેને આગ નિ મુરી માનની પૂજની આરી છે જૈનામમેમા મુખ્યતાએ તત્વશાન અને મોક્ષાશાન તથા સાધુના આચાર વગેરેની મુખ્યતા છે અને મન શામિમા મત્રક પની મુખ્યતા છે આગમેમા આગ મરણુથી હડકાર હોંકાર જાદિ જીજમત્રો વગેરેની વ્યાખ્યાઓ દેખાતી નથી પૂવાચ મો મોગ બાં મત્રશામિનો ભાગ તેા શુભ રાખનાહતા અને સ્વશિ રોન પખુ લય બધીને તેઓને ખાનગીમા મત્ર રદમ્ય આપના હતા મત્રશામિને બા નમા ગોપની રાખના હતા કે જેથી તેનો અધિકારી પુગ તેનો ઉપ યોગ કરી શકે મત્ર દશનધમશામિમા મત્રશાન વિભાગ છે અને તેને સવ દશનધમવાળાઓ શ્રદ્ધાથી માન્ય કરે છે જૈનો જનમત્રશામિને અને શામનદેવોના મત્રોને માન્ય કરે છે અને જનશામન વીર દેવવશ વગેરેો માને છે પૂજે છે કારણ કે તે મમ્યગૂ ટિ જૈનધર્મી દેવતાઓ છે તેથી તેઓને જૈનો આધર્મિક બધુદેવ તરીકે માને છે જનોના સવ જનમત્રિશ દેખે તેમા શ્રીસિદ્ધસેનસરિકૃતપ્રવચનસારાહાર આનિ શયેના આધારે મનનાપક તીર્થકરના પક્ષમણિની વગેરેનું સ્થાપન ભાય છે પ્રતુની તતિનાની વિચે દેરી હોન છે બદારના મડપના ગોખલા- જોમા અને કારના શમધારક પક્ષ અને વશિષ્ઠીની પ્રતિજો મનથી પ્રતિગિત કરેની હોન છે આનો પ્રચાર પ્રાચીનમનથી શામિના આધારે મિદ્ધ માય છે ચક્રેશ્વરી પન્નાવતી અમિ : કારી માણિમદ્રવીર

ઘડી પુલ્કીર વિમલેશ્વર યજ્ઞ વગેરે નામો તેા જૈનોના નાના બાનને
 પણ જાણી ગણે છે જૈનધર્મ મહાપ્રભાવ મહાસાધનાની શ્રી મુનિચંદ્ર
 ચરિત્રે સતિકરની રચના થી છે અને તેમા દેવોની અને દેવીઓની
 મહાયની મિદ્ધિ કરી છે જે દેવો અને દેવીઓ સદાય ન કરતી હોય
 તેા ભગવાનુ સ્વામી જેવા ઉત્સાહગાહુની રચના કરતે જ નહીં શ્રી
 મહાવીર પ્રભુને મુનિશામા ઇન્દ્રે મહાય આપવા ઇચ્છા જણાવી હતી
 હવે તે મહાય લેવી વા ન લેવી તે પોતાની મરજી પર આગર રાખે છે
 મિદ્ધાથ જનરાએ મહાવીર પ્રભુને મહિમા વધારના પ્રવૃત્તિ થી હતી
 શ્રીશ્રીપાનગમ્ને મિદ્ધચંદ્ર મન યતની આરાધના કરી હતી તેથી તેમને
 દેવોએ મહાય દરી હતી મનમા મેઝમેરિકમ, હીપનોગીઝમ જેવી શક્તિ છે અને
 તે મનના પ્રેર્યા દેવો આવે છે અને મહાય કરે છે પૂર્વાચારોની સ્થવિતની
 યાત્રી - જે ધ્વપસરના પ્રાત બાગમા છે તેમા પણ પૂર્વાચારોએ મોઢ
 સામનદેવોની મનોની મતથી અનેક ચમત્કારે પના સના દર્શાવે મા
 જુદ છે મનાનની જૈનો ઉપર્યુક્ત બામતને મત્ય માને છે જૈનો ચાર
 પ્રકારના દેવોને જૈનશાસ્ત્રોથી માને છે જીવનપતિ, વ્યતર જ્યોતિષ અને
 વૈમાનિક એ ચાર પ્રકારના દેવો છે, તેમા વૈમાનિકદેવો તેા અહાધીએ ગજવેક
 રહે છે તેમા પ્રથમ ચાર દેવોના વિમાનો છે તેના ઉપર નચ્ચેનેય
 દેવોના વિમાનો છે, તેના પર પાત્ર અનુતરવિનાનોના દેવો છે અને
 તેના પર મિદ્ધિના છે તે ઉપર મિદ્ધ પરમા માઓ રહે છે ચંદ્ર મુય
 આ નક્ષત્ર અને તારાઓના વિમાનો છે જે આનશમા દેખાય છે
 તેઓમા જ્યોતિષી દેવો દેવીઓ ગુરુ છે અને જીવનપતિના દેવો આ પૃથ્વીની
 નીચે રહે છે અહીંથી દ્વયોજન નીચે અને તેમજ ઉપર વ્યતર
 દેવો રહે છે એ ચાર પ્રકારના દેવોમા કેટલા મમત્તિની ભાગ છે અને
 તેના મિદ્ધાની ભાગ છે ચોથા જો તેા મમત્તિ છે નન નરને

અને હરા દિક્ષાનેને નૈનો પૈતૃષ્ઠિક દ્વિદુઓ અને મૈદો અને છે પણ
 નેમા નૈનો નૈનશાસ્ત્રોના આધારે તવમ્ના કિને મમજિની માને છે આ આ
 નમના દેવોનું સમૃદ્ધી વૌરેમારિઆગથી વચુન છે આર પ્રમરના
 નિવાલી દેવો પણ પૂવધમુનિ ચેમી મદ્દામાઓના ઉપદેશથી સમ
 કિની બને છે બાવનવીરો અને ચેમમ ચેમગિનીઓ પૈમી મારિને વૈન
 મુનિયો મતથી પ્રત્યક્ષ કરી મોધ આપીને વૈન દેવપુર ધમની અનાવ ગા
 ડીને તેને વનશામનરદાશ તરીકે સ્થાપી શકે છે અને તેઓ સ્વધર્મ
 વન બધુઓને પ્રમજોપાત મધારામિન મત્ત કરી શકે છે તેમ શ્રીપદા
 મ્લુ રીરને પણ આપણા પુત્રાચાર્ય મતથી આરાર્થને પ્રત્યક્ષ કરી વન
 ધમો બોવ આપીને સમજિની બનાવ્યા છે અને તેમને વૈનપ્રતિન
 વિધિમનમા દાખન મ્થા છે પુવકારીન વા અચારીન વનશામોએ એ
 રીને અનેક દેવોને વૈન ધર્મશામી બનાવ્યા છે તેથી વૈનો શાસનદેવોને
 સ્વર્મો બધુવન માને છે પૂરે છે અને સસારની ધર્મપાત્રમા મ ૧
 મારે શતિસ્ત્રવના મગોની પેઠે વિનવે છે આરી પૂર્વોચાપની પરપરા
 મમની પ્રજ્ઞાપીકાને માન્ય રાખીને વનો ધટાકલુવીરને ધૂપ દીપ કરે છે
 ધટાકલુવીર ચેમયા ચુખરયાનકવાળા દેવ છે તેથી તે ચુદ્ધ્ય વૈન ન
 વ ના સમજિની બધુ દયા તેથી તેમની અમળ સુખડી ધરીને વૈનો ખાપ
 છે મરલુકે-ધટાકલુવીર આવક દેવાથી આવક નેમ આવકનું ખાપ
 છે તેમ તે આવક દેવાથી ચુદ્ધ્ય વૈનો તેમની સુખડી ખાપ છે વન
 મુનિયો, પતિયો શ્રીપદો નાવમે ધટાકલુવીરનો મન આગરે છે
 ધટાકલુ મરનો નાપ કરે છે મેટ્યાક પતિરોએ ધટાકલુવીરી ૧ મતથી
 સપ વિહી વગેરેના વિદ ઉનાયા છે એવુ મે પ્રત્યક્ષ દેખ્યુ છે તથા
 ૩૦ શકે ધટાકલુવીરનો મત માધીને ચેમીઓએ ઉતારે હનો અને
 વિહીનુ વિદ ઉનાયુ છે અને તે પણ વિહી કરે માને પાવ દમ હાય

દર સખીને વિષ ઉતાર્યું છે તેો મહને અનુભવ છે જોને શ્રદ્ધા હાથ
 અને પરસ્ત્રી ત્યાગી હોય તેને અનુભવ આવે છે ઘટા ઈસીરને નવમ
 દોની પેડે જૈનો અને હિદુઓ ન તે માને છે અને જન્ને તેની આરા
 ઘના કહે છે ઘટાકર્ષ મહાસીરના મન 'પ' મે નથુ જનના છે અને
 તેમા કયા કયા મર્ચ પર તે મન પ્રસ્ત કે તે તેમા વિધિપૂર્વક જણાવુ છે
 અમારા ગુરુ મહારાજશ્રી અમાગરજીએ વિ સ ૧૮૫૪ ના રાગણુ
 મામમા ઘટા ઈ મનની ગુરુગમતા આપી હતી જૈનગાડુઓ પૈખી
 ઘણા ખરા ઘટાઈસીર મનની આરાવના કરે છે ઘટાઈસીની મનમ્યાની
 અમલા, વિગ્નપુર વગેરે જે જે સ્થાને પ્રતિગ કરાવનારા જૈનો છે તેઓના
 ત્યા હોય છે આપણે જમ આ માઓ છીએ અને પરસ્પર એ ખીજને
 મદ ધરીએ છીએ તેમ આરે પ્રારના દેવનાઓ પણ આમાઓ કે
 તેઓ પણ આપણને ધર્મોક્રાગથી વા મનારાવનમોગથી મત્ત ક્રે
 છે આપણા કર્મના ઉત્તમા તે નિમત્તેતુ થાય છે શ્રી ઉમાશ્વાતિવા
 અષ્ટે તત્ત્વાથસૂત્રમા પરસ્પરોપગ્રહો જીવાનામ્ એ સૂત્ર રચી તેમા
 જણાવુ છે કે સસારીસર્વજીવોને પરસ્પર એ ખીજનો ઉપકાર
 થાય છે દેવો, મનુષ્યો તિર્થઓ વગેરે મર્વ એક ખીજ પર અનેકરીને
 ઉપકાર મહાય, મત કરી શકે છે તેમ તત્ત્વાર્થ સૂત્રથી સિદ્ધ થાય છે
 અમકિની જૈનો, દાન દુનિયામા એના સમકિતી મનુષ્યોની મતથી થવી
 શકતા નથી તેઓ હિદુ મુમ માન વગેરેની મત મહાય ઉપકારથી
 પોતાના દુખ ઠાળી શકે છે, અને આજીવિમ ચનાની શકે છે તેથી
 મ્હ તેઓને મિથ્યાન્વ લાગતું નથી, કારણ કે જૈનો જાણે છે કે અ પ
 ધર્મોઓ તે ક્ષ વીનરાગદેવ નથી તે પ્રમાણે જૈનગ્રંથસ્થોને પણ તે
 વીનરાગ મનુષ્ય દેવ તરીકે જાણતા નથી તે પ્રમાણે તેઓ યાસન દેવોને
 અમાનર્મી મનુષ્યોની પેડે જાણે છે અને તેમને વૃષ દીપ કરે છે સ્વને

હે પણ તેઓ તરત સીતરામ અરિ ન દેવ તરીકે તરી મનુષ્ય
 રોવાથી ધર્મપુત્રી વગેરે મનતા । તેથી દમિત્રા વતિને આ વર
 નિષ્ણાત્ય યગતું નથી તે જોવાનેય તેો તેવા માનસથી નિષ્ણાત્ય ૧૧૩
 નથી રંગે અદિતો સીતરામને ૧૧૫ ૫૨૫ મા મને છે અને ૩૫૬
 દેવોને અર્ધા તપુ મની પૂજે છે તેથી તેમને નિષ્ણાત્ય યગતું નથી

શિ ૧ ૨૪ — ૧૦૧ પ્રાચીને જોવાના શુભાશુભામના તનુકા મુખ
 ૬ મ યા છે તેમા દેવતાઓની ૧૬૪ ય.૫ તે પત્રી શુભશુભ ૧૬
 ૨માએ ૩૫ ૫ યા ૨ અમ ૫૩ રીને કી સમય ૨ અને શુભા ૧૫
 ૩૫ ૨માએ ૩૫ ૫ ય.૫ ૯ તે પત્રી સમનદેવોની ૫ ૫૫ ૫૦ની
 ની વચ છે !

શુક—નવદેવને સ્વસ્વમાનુમાને શુભશુભ સુખ ૬ ૫ ય.૫ ૯
 ૩માશુભ સુખ ૬ ૫.૫ ૬૨૫ ૨૫ છે તે ૬૫. ૧૫ ૩૨૫ ૯ અને ૨૦
 આદિએ ગતુ યે વગેરે નિમિત્તમ જે છે તેજુ કિપાતન શુભાશુભામ
 ૨૫ છે તેવા ઉત્પ ૨માએ નિમિત્ત મરનોના ૫૫ મરીએ મો
 છે શુભાશુભ ૨માએ વેદવામા છવે અને અછવે નિમિત્તામજુ યાવ છે
 જે મનુ યે દેવશુક ધર્મની આરાધના કરે છે તર મવમ દયા દન ૧૫
 નિયમ ધારણાધ્યાન મમાધિની પ્રાપ્તિ છે છે સ શુભેની અને મદાવ
 રની આરાધના કરે છે આરાધમ વા માધુષમની દરમણથી આરાધના
 મરે છે સીતરામદેવ કે જે પ્રવચાની સુશસુરે-પૂજ્ય અ ૧૫ ૫૨૫
 સહિત છે તેને દેવ માં છે અને ધમમા ગિયર મરે છે તેએને ધમ
 મરના સહ વિપતિ ૫ તા તેએના શુભથી સમનદેવે બેચાડી જોવાની
 ૬૫ અ ૧ ક૨િમિ મ ૧ કરે છે એવા ધર્મી મનુ યે અનિમચિન ક્રમે
 ૬૫ને દહાવે છે અને તેમા ૫૫ દેવે મદાવ મરી નિમિત્ત રજુ બને છે
 ૧૧૫ ૧૫ નિમિત્તક્રમે ૫ દોષ છે ત્યા દેવે ની મદાવ થતી નથી અને

તપ મયમ કરતા જતા પણ શ્રીમદ્દાસીર પ્રભુને અને ઉપમગો ને ના
 પડ્યા તેમ તેના પડે છે તેમા પોતા, અને દેવોનુ પણ કશુ આનન્દ
 નથી ગાનીએ ત્રિ મ ૧૮૭૮ મા દિદુઓને સ્વરાજ્ય મળને એમ
 ક્યુ હતુ પણ દિદીઓના હજી સ્વરાજ્ય પ્રાપ્તિમા જ્યાસુની નિમગ્નિ
 ક્યો છે ત્યા સુની તેમને સ્વરાજ્ય મળી શકવાનુ નથી ત્રિ સ ૧૮૭૮
 મા મરં દિદીઓ મોગમાગે એના નિશ્ચાગી બની ગયા હતા કે
 દિલે સ્વરાજ્ય ગાની અપારને પણ ગાંધી અપારી શમ્મા નર્દી તેમા
 દિદીઓના નિમગ્નિ કર્મ ૥ ઉ વ નરણુ છે અને ગાનીશની ઇચ્છા થતા
 તે હજીમુની સ્વરાજ્ય અપારી શક્યા નર્દી તેમા તે આનન્દમબધી ગા
 નીશનુ પણ નિમગ્નિ કર્મ છે કર્મ એવા છે કે તે ભોગવના પડે છે
 મનિમગ્નિ કર્મોનો તો નપ સયમમાન ધ્યાન વગેરેથી નાશ થાય છે
 પણ ઉકૂટામાગે બારેતા નિમગ્નિ કર્મો તો અવરય ભોગવવા પડે છે,
 અને તેની પ્રભુ મદ્દાસીર દેવ પણ બચ્યા નથી પ્રભુ મદ્દાસીર અને
 અશુભ કર્મો ઉ વ હનો ત્યા સુની અશુભ નિમિત્ત સરોગો મળ્યા હતા
 બો જ્ઞારે શુભ કર્મોનો તેમને ઉદ્ધય થયો ત્યારે ઇન્દ્રાપ્રદેવો શાતા પુત્રના
 માથા ગાનમસુદને જ્યારે ખીનો વાગે અને તેની તેમનો પગ વિધા
 ગે ત્યારે તેમના જિવોએ પુત્રુ કે તમને પ્ર્યા કર્મથી ખીને વાગે
 ત્યારે ગાનમસુદે કનુ કે અર્ધીથી એ વડુમા ભવમા એ મનુષ્યને વાની
 નાખે તે વખતે કર્મ આ પુ તેના ઉચ્ચી દાન પગે વિધાને
 મુનુ અને કોઈને પગે હાથમા પેગમા, કાનમા જ્યા જ્યા જેની જાનની
 વે ના કહે છે તેને તેથી ત્યા ત્યા તેની વે ના ભોગવવી પડે છે શ્રીપાન
 રાગને મા થયો પણ શુભકર્મો ઉ વ આનવાનો હતો તેથી નરપ
 મિદ્ધચકની આરાધના થઈ શુભ કર્મ, તપ, યજ્ઞ, મયમ દાન, યાન
 વાથી પૂવભવના કરેના કર્મો હાથ થાય છે અને પાપ મે પણ પુપ

મેના ઉપમા ફેરવાઈ જાય છે અને કર્મના અનિશ્ચિત કર્મો પનો ૫૫
 નાગ થાય છે તે પ્રમાણે શીખાન રાખને યજુ અને તેનો યજુ મેગ મગી
 મો અને શુભકર્મનો ઉદય થવાનો પ્રમગ આ પો વ્યારે હ કે દરિ
 ભુગમેથી દેવને ક્યુ કે તમે દેવાનદાની કુખથી પ્રતુ મગીરને શ્રી
 નિશાશાશીની કુખમા મૂનો એમ હ કે ક્યુ અને હરિભુગમેથી દેવે
 તે પ્રમાણે મુ તેમા પ્રતુ મદારીરદેવને શુભકર્મોવ્યમા દેવેની સદાય
 મગી એમ મિદ્દ થાય છે જ વ્યારે મદારીરપ્રતુને તીર્થકરનામ
 મોવ્ય પ્રમગે ત્યારે એવેએ મમવમરણુની રચના કરી અને પતુને
 પુત્રા મન્યા મગરચકવર્તિના માદ હગરપુત્રોએ અશુભકર્મ બાધુ
 હતુ તેથી બુદ્ધપતિદેવે સાદ હગર પુત્રોને નાગી બરમ શ્રી દીધા
 ત્યારે શ્રીકૃષ્ણની હારિષ નગરી મગનાનો પ્રસમ આ પો ત્યારે શ્રીકૃ
 પ્ણથી પતુ ને બચાવ્યા નહીં વિરુ પુરાણના બાધારે દેવો કે શ્રીકૃષ્ણે
 દેવનો ત્યાગ કરો અને અશુન-શ્રીકૃષ્ણની ગોપીઓને લેઈ હરિનાપુર
 તરફ વળ્યા દના ત્યારે વચ્ચમા અશુનને કામાઓએ હુમ્યા અર્જુન
 બાધવગી ગણાતો હનો તેપણુ તેતુ બાધુ મપ કરી શકુ ની અને
 ગોપીઓએ ક્યુ કે દ્રાપની અર્જુન વગેરેની સદાયકરનાર કૃષ્ણ ! ! સદારે
 આવ ! પણ કૃષ્ણ આ-મા નહીં અને ગોપીઓને ઠામા પોતાના ઘરમા
 લેઈ ગયા હિદ વિ ૧૯૭૮ મા ગાંધીજીનુ રાગી હતુ તેપણુ મગારે
 ગાંધીજીને અશુન કર્મના ઉત્તથી કેદમા ધાવ્યા અને શુભ કર્મો ૫ થયો
 ત્યાર કે માર્થી હુમ્યા તેમા શુભાશુભકર્મો ૫ શુખુ ખ ફળમા દેવો
 મતુ પો વગેરે જીવો નિમિત્ત હેતુ થાય છે એવા કર્મના સનાનન મિદ્દાને
 નેનો હિદુઓ મોદો માન્ય કરે છે તે પ્રમાણે ચારનિકાવતા દેવો
 પબ અન્ય જીવોને સુખુ ખમા નિમિત્ત કારણુ બને છે એમ વલ્યાનીને
 હવે દેવો બધોના ખ્યાનુસારે બધોને મદારી થાન છે તે નૈનશાસ્ત્રના
 બાધારે વલ્યાનુ ધુ

ત્રિપદીશનાકાપુરુષચરિત્રગા દેખા-શ્રીકૃષ્ણે અકૃમ -રીને દેવની
 આરાધના કરી અને દેવ પ્રત્યક્ષ થયો ભરત ચક્રવર્તીએ અકૃમ કરી
 દેવ પ્રયક્ષ કરી રાગે વિગાની માવના કરી તેને વિધાઓ સિદ્ધ થઈ
 પૂર્વનવના રાગથી વજ્રસ્વામીને તેના મિત્રદેવે વિધાઓ આપી શ્રી
 હેમચંદ્રચાર્યે ગિરનારમા દેવીની આરાધના -રી અને દેવીએ વર ન
 આપ્યુ શ્રી નિમળગાદ દડનાય- કુભારીયામા અમિતદેવીની આરાધના
 કરી અને વિમળશાહને અમિતદેવીએ રાજ્ય કરનામા તથા દેવર
 બંધાવવામા સહાન કરી શ્રી પ્રિયગુસરિએ જોખામા અમિતદેવીને
 તારી જોનારી પશુચર બંધ -યો શ્રીકૃષ્ણને દેવે રોગ કરનારી ભેરી
 આપી શ્રી રેવીશમા ત્રીચર પાર્શ્વનાથને કમડ મેધમાની જે ઉપમગ
 યો ત્યારે ધરણે-ને અને પત્માવતીએ આરી મહાય કરી એમ પ્રત્યક્ષ
 નમા જણાવ્યુ છે શ્રી દીરનિજ્ય સરિને શામનદેવોની સદાય હતી
 શ્રીજિન ત સરિને શામનદેવોની સદાય હતી ઉત્તરા યજન સૂતમા દરિ
 કરી ચડાન સાકુ થયા તેમને યજ્ઞશાળામા બીખ માગના બ્રાહ્મણે મરણ
 ઉપા ત્યારે યજ્ઞે પ્રગટ થાને હરીદેવીને મહાય કરી કૌશિકીએ
 પુદમા દેવે મહાય કરી હતી જણુસ્વામીના રામમા શ્રી યજ્ઞે
 ઉપાચારે લખ્યુ છે કે મે જગાના યજ્ઞપદ મરસ્વતીને આગવના
 -રી અને તેથી મરસ્વતીએ પ્રત્યક્ષ આરી વરદાન આપ્યુ કૃષ્ણમા
 સરિને સરસ્વતીએ પ્રત્યક્ષ થઈ વગ ન આપ્યાની વાત પ્રભાસરિનમા
 છે વસિષ્ઠના શિનાળને દેવીની મહાય હતી શ્રી કૃષ્ણે નવને
 શ્રી હેમચંદ્રચાર્ય દેવ મારક્ષત મહાય આપારી હતી મેળાએ વૈષ્ણ
 ધારી મનીઓને દેવોએ મહાય કરી હતી એમ વૈષ્ણવો કહે છે
 યજ્ઞેની વીરોની મહાયતાના અનેક ઉપનાઓ મળી આવે છે
 જેનાં ત્રીન નિમચિત કર્મ છે અને તપ જપ

હતા હું રાક્ષસ જેવા મનુષ્યોના હુમલાઓથી ધર્મ પ્રગતિ રક્ષણ
 કરતા હતા કુનારી મ્યાઓના શીવનુ રક્ષણ કરતા હતા પાપીઓના
 ત્રમને હાડી પ્રગતિ પ્રાપ્ત કરતા હતા ધનુષ્યમાણુવડે અનેક હું
 રાગઓનેડે યુદ્ધ કરીને તેઓને છુટ્યા અને આરિદેશીમા શાન્તિ
 પ્રાપ્તી તેમને સુખડી પ્રિય હતી તેઓ અનિધિઓની મેવા બખ્તિ કરતા
 હતા અને ધણા શૂરા હતા તેથી તે મરણુ પામીને દેવ થયા અને
 ગાવનરીરોમા નીલમા સીર તરીકે તેમની પુના થઈ તેઓ પૂવન
 નમા પરોપકારી હતા તેથી વીરના બવમા પગ તે બને તેમથી ધર્મ
 નક્કાઓને તેઓના યુગ્મકર્મોનુનારે સદાય આપે છે પૂર્વમરમા તેમના
 હાથમા ધનુષ્યમાણુ ખડ્ગ હતા તેથી તેમની મૂર્તિના હાથમા ધનુષ્યમાણુ ખડ્ગ
 આપવામા આવે છે તે સમ્યક્ દિદેવ ક્ષત્રિય રાગના જેવા આરમા
 તેવાથી આ હાથ પશુ તેવા કામે કરતા હોવાથી ઉત્તર વેદિય શરીરની
 અપેક્ષાએ ધનુષ્યમાણુવાળી તેમની મૂર્તિ કરાય છે જેમ રાગને સવ
 ધમવાળી પ્રગ માને છે તેમ ગાવનરીરોને પશુ ને સવના બનામા
 મજારે રક્ષક મિનિઓની પેડે ભાગ લેના હોવાથી વૈન હિદુ મેદ વગેરે
 ધમવાળાઓ માને છે પૂજે છે કાકારને કાકારની અપેમાએ માનવાથી
 જેમ મિથ્યા ન લાગતુ નથી અને દેવા કરાવવાથી જેમ મિથ્યાત્વ લાગતુ
 નથી તેમ ધરાકર્ષીનીને વીર તરીકે માનવાથી અને દેવાધિદેવ વીતરા
 ગને અરિહન દેવ તરીકે માનીને પૂજવાથી શોકાન્તર મિથ્યાત્વ લાગતુ
 નથી ધરાકર્ષુનીર છે તે અવિરતિ સમ્યક્દિદેવ છે તે ચોથા ૩
 છુમણુના વૈન મુદ્ધમા જેવા છે તેથી આપણે તેમને આરમે પોતાના
 અવકમધુના જેવા નિય ગણી તેમના યુગ્મોની સ્તુતિ કરે તેમની
 મૂર્તિ આગળ વૃષ દીપ નૈવૈવ ધરે તેથી કષ્ઠ સમતિમા દાવા
 લાગતુ નથી જે તેમને તીર્થકર દેવ તરીકે માનીએ તેા મિથ્યાત્વ

યોગમા દેવ દેવીની સ્તુતિ આવ છે અને તેમા કેવળેની મહાશક્તિની
 વાત આવે છે જૈનદેવપ્રતિનિ ગ્રંથિમનાની દ્વિયામા જનગામન દેવોની
 અને િઓની સ્તુતિ આવે છે અને તેમા ચિત્રનિવારણ, કરવામા સહાયતા
 મવાની વાત આવે છે તેથી તેની રીતે ધર્મગણે મનારીરની સ્તુતિ કરતા
 અને વૃષ દીપ નૈવેદ્ય કરતા ભેદાન્તરમિત્રાચ લાગતું નથી એમ આપણા
 પુનાચારોની શૈલીથી પણ મમજાન છે આપણા અર્વાચીન આચારોને જો
 ઘટાકણુ ધીરની આગળ સુખડી વગેરે ધરવામા તથા તેમની સ્વરક્ષણુ સદાય
 તાની માન્યતામા મિથ્યાત્વ જણાયુ હોત તો તેઓ પ્રતિજ્ઞા વિધિમા
 ઘટા છુરીરને ખન કરત જ નહીં અને તેમની પૂજન કરત જ નહીં

આપણા જૈનોને આવક સાડુ ધર્મ આરાધતા વેદા ડોહરે
 ગાઓ સૈન્ય પોલીસ મન પ્રે છે અને આપણે તેને તે તેજા સી અપે
 લાએ માવન મા િએ છીએ આ જિનેન્દ્રદેવ સુગર વગેરેને મહાસાધન
 પરમ નાનન તરીકે માનીએ તેથી ધર્મ આપણને મિથ્યાત્વ લાગી જતુ
 નથી અને આપણે જૈનો કઈ આડા માર્ગે જતા નથી મનુષ્ય કે સવની
 અનુભવે મહત્તા ઉપરોગિતા જાળીએ છીએ તેમા ડોહર વેદ સૈન્ય
 ગિપાલ રાજ વગેરે પણ અપેક્ષાએ જેમ સુમાધન છે તેમ તીર્થંકરદેવ
 મ ગુર દેવ પડુ અપેક્ષાએ મહાનુમાધન છે પણ તે જેમાથી ડોહર
 વેદ પોલીસ વગેરે તીર્થંકરમહાસાધનની અપેક્ષાએ પરપરાએ
 નિમિત્ત સાધન-ઉપરોની સાધન તરીકે ગણાય છે અને તીર્થંકર દેવ
 ડુ અને જૈનધર્મે ન જતા અન્યત મહામાધન નિમિત્ત મરણુ ગણાય
 છે પણ તીર્થંકર વીતગમ દેવની મહા માનનતા છે તેથી કઈ વેદગ્રંથ
 વગેરે સદાચારોની કુમારનતા ગણાતી નથી તેમ શામન દેવો પણ
 ધર્મમાર્ગમા આત્માની શુદ્ધિ કરવામા વિધન નિવારણુ કરનારા હોવાથી
 તીર્થંકર રૂપ મહાસાધનની અપેક્ષાએ તેથી ઉતરતા સુમાધનરૂપ ગણાય

હતી તેથી તેને દેવે બનીશ જોગીઓ આપી હતી તેથી બનીશ પુત્ર
 યથા તે એવશાના હરણ વખતે મરણ પામ્યા હતા ઉપરના દેહનોથી
 દેવદેવીની સહાયતા થાય છે એમ મિદ્ધ થાય છે જેઓ દેવો અને ટ્રીઓ
 યજ્ઞો વીરો વગેરેની હયાતીનું ખડન કરે છે તેઓની માન્યતા જૂની છે
 જેઓ સંપત્તાનું ખડન કરે છે તેઓ જનશાસ્ત્રોની ત્યાપના કરે છે અને
 જૈનધર્મના શત્રુ તરીકે નાસ્તિકતરીકે જાહેરમાં મિદ્ધ હરે છે જનતાએ
 તેના નાસ્તિકોની સમતિ કરી નહીં જેઓ જૈનશાસ્ત્રોમાં કહેવા અંગ
 દેવનોકની ઉત્થાપના કરે છે તેઓ ખુ સવચ મનારીરની ત્યાપના કરે
 છે સ્વર્ગ અને નરકની ઉત્થાપના કરના જૈનશાસ્ત્રો જૈનધર્મ અને જૈન
 તીથપ્રેની ઉત્થાપના થાય છે જૈનશાસનદેવોની નિન્દા આશાનના પ્રનાથી
 અને સુરઓની નિન્દા પ્રનાથી જનો ક્ષય થાય છે પગામસન્નયમ
 દેષાળ આસાયણાપ, દેષીળ આસાયણાપ એવે પાક છે
 દેવોની અને દેવીઓની નિન્દા આશાનના અને તેઓનું ખ ન પ્રનાથી
 પાપમ્મ બનાય છે

શ્રી મનિનાથ જોયણી પાનમર કેગરીના ૭ મુડી વગેરે અમ
 કારી તીથોમાં જે યાનાગુઓ જાય છે તે સર્વે યાધાઆપડી પુત્રઓ
 લખીની લાખયના માયા જન છે અને દેરા ખાન છે જ્યાંકિ મ્થનારા
 તથા તેખા આનમમાજીજેવા તથા નાસ્તિકોનાં ઉત્તિવાળા છે તેઓ પોતાની
 દટિ જેવા ધીજને ટ્રી ક્ષેનારા જાયના જનો કે જે કુનયમી જનો
 છે તેઓ અન્ય દરાનીઓના તીથો પ્રના જૈનતીરોની યાત્રાએ જન છે
 તેઓને નિમરસમકિત યચાના ધણા પ્રરઓ મળે છે અને તેઓ જિને
 મગની બકિત સાડ વગેરેની બખિત પ્રીને ત્યા નિર્ગરા તથા અનતપણુ
 પુષ્પ ઉપાજન કરે છે તેથી ઉમપુષ્પકમોને આ બચમા પા તેઓ
 મકમીપુત્ર સ્ત્રી વગેરે વાહિત વસ્તુઓને પ્રાપ્ત પ્રી થાય છે અને તે રાકિ

नमो भगवते वासुदेवाय अविनाशं सुखं चैव मया पश्यंतीत्युक्त्वा
तत्रैवैवमुक्त्वा सुखं चैव तेनैवैवमुक्त्वा आश्चर्यं नदी तत्र
नमो भगवते

६ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय अविनाशं सुखं चैव मया पश्यंतीत्युक्त्वा
तत्रैवैवमुक्त्वा सुखं चैव तेनैवैवमुक्त्वा आश्चर्यं नदी तत्र
नमो भगवते

नमो भगवते वासुदेवाय अविनाशं सुखं चैव मया पश्यंतीत्युक्त्वा
तत्रैवैवमुक्त्वा सुखं चैव तेनैवैवमुक्त्वा आश्चर्यं नदी तत्र
नमो भगवते

अना
पदी
नारा
रर्मा
कुत
आने
होय
नी
उ
नी
ने
व
उ
र
उ,
बि
य
भा
भा
ने
रे
ग
मे

જોને તપવગેરેના મત્રસાધકોથી બળથી અવધિગાનવડે જાણી શકે
 છે અને તેઓને સ્વસ્થાને ભેગા બે । પણ સદાય કરવાની શક્તિ વડે
 સદાયક યાજ છે અને કોઈ વખત પ્રત્યક્ષ પણ દશન આપે છે, તથા
 સ્વપ્નમાં પણ દશન આપે છે દેવોના અને દેવીઓના નામે ઇન્દ્રના વૃક્ષ
 લોકે પાખડ ચનાવે છે અને માન પૂજા લક્ષ્મીની લાનચે મ્હને દેવ પ્રત્યક્ષ
 છે હું અમુક કાન કરી શક છું એમ વૃક્ષ કહી લોકોને હમે છે તથા
 લોકોની આમળ ધૂં છે તથા અમુક દેવી પામે ભોકરે માગે છે
 એમ ધણીને મ્હે છે એના વૃક્ષ પાખડી હમ લોકોથી કદાપિ છેતરાવું
 નહીં અને તેઓનું કથન સત્ત માનવું નહીં અને તેઓની સગતિ પણ
 કરી નહીં દેવો અને દેવીઓ પાડા અને બકરા વગેરેનું માસ ખાતું
 નથી અને તેથી ખુબી ચી નથી એમ જૈનશાસ્ત્રો પોમર કરીને જાણાવે
 છે માટે જૈનશાસ્ત્રો મિથ્યાત્વી દેવોથી અને દેવીઓથી અને તેઓના બંધોના
 વૃક્ષોથી દૂર રહેવાનું ફરમાવે છે અને જનશાસનદેવો કે જેઓ
 જૈનસંધના સદાયક છે અને જૈનમમકિનધર્મી છે તેઓની સાથે
 સાવમિક્ષમંડુની દૃષ્ટિએ પ્રેમથી વનવાનું જાણાવે છે તેનો જૈનમતિ
 ગમા પ્રવેશ કરે છે તાર શ્રી તીર્થંકર વીતરાગદેવને મુનનાયક પ્રમુ
 તરીકે જાણે છે અને તેમની નીચેની દેવીને તથા જોખના વગેરેમા
 વક્ષ યક્ષિણિ પ્રમુના એવક તરીકે જાણે છે અને તીર્થંકરપરમાત્માને
 તેમની દગાએ પૂજી સતી યુગો ગ્રહે છે અને શાસન વેદેવીઓને
 તેમના અગિયાર પ્રમાણે માને છે પૂજે છે તેથી જૈનોને લોકોત્તર મિથ્યાત્વ
 લાગતું નથી જે જૈનો લોકોત્તર મી । તાર જાન છે તે કરતા જે જૈનો
 તેની ભાવનાથી બાબત ધેવોની પામે જાન છે તેઓ કરોડગણો મિથ્યાત્વ
 વામનાઓથી બચી જાન છે અને તેઓને જૈનોનો પરિચય રહેવાથી
 મુજ સમકિન આતિના આચારમાંથી ખમી જવાનો વખત પણ આવનો

મેળવના પ્રયત્ન કરે છે અને તે બાજાએ પ્રયત્ન કરના અને જૈન સ્વરાજ્ય મળ્યા છે એ આ મામા સુખ માત્રને શાસનદેવેને અને તીર્થંકરોને પત્રીથી પૈર્ગનિક સુખ માટે પ્રાપ્ત કરતા નથી અને પત્રીથી જાન સુખાર્થે તીર્થંકરો માનવતા કરના ગામસુખાર્થે તીર્થંકરોને માને છે પૂરું છે અને શાસનદેવેને પશુ આ મનુષ્યાર્થે મન લગી માને છે એરી હ્યા મ્હ એમ મ પ્રાપ્ત થતી નથી જરા સુખમાથી આ મ સુખમા આવના થયે કાન વની ના છે શુદ્ધ્ય જૈનો દેવના કુશ્યારથી છે તેઓને દેવગુરુ ધર્મની આમથી નદક દોડ છે અને તેઓ જોયે જૈન ધર્મવદ્યુ હોય છે તેઓ પરમગરીને મિત્રાનીએ કરના બનત સુણા ઉતમ છે અને તેઓ અનુક્રમે જૈન ગામા દગવે દગવે આગળ વધ છે તેઓને તેઓની નિચરમતિમાથી બાન મરી અનુમાની અનિશ્ચયી બનાવવાથી તેઓ મ્હ આગળની જ્ઞાને પ્રાપ્ત કરી રાકના નથી અને વતમાન શામા મશરી થાય છે અને ઉ હા પનિન પશુ થાય છે તેઓ જૈન સંજોની બાની શરીમા શમ કરે છે તેવા મશયાતમાએ ના થઈ જાય છે

લોકિકદા કરેગતા મહાતમા ાથી જેવાને પશુ દુનિયાના સ્વરાજ્યને પ્રાપ્તકરવાની ઈચ્છા રી છે, ગારીજ મ્હ પા મનિ સ્વરાજ્યની શાસનથી રહિત થવા નથી મરણ તેઓ નિગસિમાગને પગ મળતા નથી તેા શુદ્ધ્ય જૈનો દે તેઓ નાથા અને પાત્રમા સુખસ્થાનમ્મા છે અને તેઓને મુક્તિ સુખની ઈચ્છાની સાથે હજી સામારિમ જાસુમે જોગ વવાની ઈચ્છા છે તેઓ લામી સ્ત્રી-પુન સ્વરાજ્ય વોરેની મ્મા મ્દે અને તેઓની મપિ માગ શાસનદેવેની પશુ આરાધના કર તેમ કમ જૈનશાસ્ત્રોથી તે વિરુદ્ધ વતતા નથી તેઓની નિદા કરની અને તેઓ પુનિકિ મગે નીમેમા આગ દેશ મારે છે દેવદા કિહુ તે જૈન

શાસ્ત્રોનું પોતાને જ્ઞાન નથી એમ જણાવે છે અને જૈનોને જૈનતીથોમા
જતા અમને છે એમ સમજવું નહીં પણ તીથ વા કોઈ પણ મસ્થ
થઈ એવે તેમા જૂન હોય વા ન હોય પણ તેની ટીકા નિદા કરની
હોય તો કી ગમય છે તેથી કઈ શ્રદ્ધાનુ ભ તોને ખરામ અમર થની
નથી શુદ્ધ થ જૈનો સ્વપિત્રે ર્મ પાગી શકે છે તીર્થસ્થળોની યાત્રાએ
જનાગ જૈનોએ મય મોનવુ યથાશક્તિ આપિત્રે દયા પાગની ચોરી
કરી નહીં પરંતુ સાગ અને સ્વલગ મનોપરપ અધ્યયન પાળવુ જૈનો
વેતેને સાગ્યુ કર છે અને પ્રભુની યાત્રા કરીને તેવા શુભો પ્રાપ્ત કર
વાનો અભ્યામ કરે છે અને સા સાનુઓ પણ તેઓને સર્ગુઓનો ઉપદેશ
આપે છે તેથી જૈનોમા શુભુ દુરાચાર રહેતો નથી અને તેમ છે તો
તેઓ અભ્યામ કરીને દુશુભુ દુરાચારોનો નાશ કરે છે જૈનો તીથયા
ત્રાએ જાય છે અને પ્રભુના જેવા પોતાનામા રહેવા મર્ગુઓનો પ્રાપ્ત
કરવા શકે છે અને એવુ તેઓને જૈન શુભો તરથી જ્ઞાન મળે છે
તેથી જૈનો પુનાની લાનમાએ બોયણી, પાનમર વગેરેની યાત્રાએ
જતા નથી પણ પ્રભુની મેવાભક્તિ માટે જાય છે એવા મમજી જૈનોનુ
ખામ લક્ષણિ જે સમ્યગ્ શિષ્ય સમધિથી પ્રગટેવુ તેમ છે,
તેવા જૈનોની અને પાનમર, ભોનણી સખેશ્વર વગેરે તીર્થોની નિન્દા
રનાગ—આગાનના જ્ઞાન નામિત્રેની સગતિ કરની નહીં પૌર્ગનિક
પુન શ્રી ધન વગેરેની આશાએ જનારા જૈનો પણ પ્રભુ તીર્થ ૨ વગેરેની
સેવા ભક્તિમા જોડાઈને પુન્ય મારે છે અને આ ભવમા પણ તેમને પુણ્ય
કમે છે એમ પણ અને છે અને છેવટે તેઓ પૌર્ગનિક મુખની આગા
દિનક્રમક્રમ મુખની ઈર્ષ્ય ગમે પ્રભુના મેરકો તરીકે તેવા જૈનો અને છે માટે
ગમે તેની મિયાત્વ ગામા પણ તીથસ્થળમા તથા સામનદેવો પામે
જવામા છેવટે આગળ ચલાવુ થાય છે મરણુએ સાધીને આગાનને ૧૧૬૧

મને છે શ્રીસર્વને પ્રથમ મિથ્યાત્વગુણસ્થાનક મ્હુ છે મિથ્યાત્વ છે તેમણીજ મમકિનમા જવાનો માગ પુત્રો થાય છે તેથી મિથ્યાત્વ સામા પુત્ર પશુ મિથ્યાત્વ ગુણસ્થાન ગણાય છે તેની રીતે તીથ સ્થગોમા સ્ત્રી પુત્રા પ્ત્રી ઇચ્છાએ જનનારાઓ તથા શામન દેવદેરીઓની બાધા માનનારા જેનો પશુ સાથીજ આગમનું ઉચ્ચ શિખણ વતન પાળવાના અનુભવોને પ્રાપ્ત કરે છે માટે ધર્માત્મ વીરાદિની નિદા જનનારાઓએ મન્યતાન તથા લોકોની ધમ પાળવાની પદ્ધતિને ખામ અનુભવ કરવો જોઈએ કે જેથી તેઓ જનનારાઓથી નિરદ્ધ પ્રરપણા મ્હી પાપના ભાગી ન બને માણસા વિ મ ૧૮૮૦ ના મહાની જયતી પ્રસંગે ઉજવાયેલી વીર જયતીના નામે શાત પુત્ર માની નામના ચોપાનીયામા બાધાનમ્હી લખ્યું છે તે મમ્હી જાજાનું કષ્ટામ્હુ સીગ્ની માધા નામના નિપત્રોની તર માળા હીમોલગનારા તનમ્હુદેહપાવી બ્હાર પાડી છે તે મ્હુ અમારા તરકર્થ જણાવવામા આવી નથી તેથી તે મમ્હી અમોજવામ ર નથી ધટામ્હુ મ્હી સીરપક્ષ સબ્ધી પૂર્વ રખા સિ મુકુ છે તેથી હવે તે સમ્હી વિગેર લખ યાનું રહ્યું નથી હાનના કુ તાક સુ મારક જેનો કે જેઓ રાજકી પ્રગતિવાળા ધમ નહાચારથી કુર્મ નાગ્નિ સત્તરી મને નાઓ છે તેઓનો વિશ્વાસ કરશો તો દુઃખો કે તાક તો રસિયાના બો ગેરિમના જેવા નિચારો ધરાવે કે અને ઇના દરેક ધમના ધમચરઓનો અને ધમના રીનાજનો નાશ કરવા છે આકુઓની-સાગીઓની મરથાનો નાચ મ્હવા હાનમા દેરાસમાજ મ્હારક દુઃખે પૈમ પશુ નામિત દુઃખોની પ્રગતિ થઈ છે તેઓ સાગીઓની પ્રગતિને વિચારે છે તે પૈમ કે નામ આ નમા સદિ કેળવવી પામે નાઓ છે તે તેઓ જનનારાઓમા ધર્મો મ્હિપત ભાગ વધી ગમે છે એમ માને છે આથી કુ તાક તો જનનારાઓમાના અગ અને નરમ્હો પુરાજોની પેઠે પૂવાચાર્ય કરેના છે એમ માને છે કે નામ સુરેન નાસ્તિક જેનો તો ત્યા

ગીઓની નિ । કૃતિ તેઓને હન । પાત્રી ભોગા અજ્ઞાન વૈભોને સા-
 ધુએ તાક અશ્વિવાગા બનાવે છે અને વૈનમામુગુદોહી બનીને
 પોતાના વિચારોનુ ખન કનાગ સાહુ સુગિયોની બપાઓમા વૃત્તી
 નિ । બપાવે છે અને વૈનશાઓની અજ્ઞાન એવા કેટલાક ભોગા સુગયા
 વૈભોને પોતાના પાપા ખેચી ત છે અને તેઓ પવુ પોતાના પગ
 પર કુદાગે માર છે, તે કુમયતોના યાય છે

પ્રશ્ન—વૈન સમા ગાનીશનુ મ્યાન છે નહીં ? કેટલા નામરાગી
 વન તેને તાગુદાર માને છે અને નહીં કે વૈન સાહુઓમા તેની મો-
 યી કેઈકનાર નરી તે સમઘી તમાગે ગો અનિપ્રાય છે ? ગાનીશના
 સાગ્નિ જેવુ વૈભોના કોઈ સાહુનુ પગ સાગ્નિ નરી એમ તેઓ ને કે
 તે સમઘી ગો ખુવાના છે ?

ઉત્તર—વૈનાગમ રાશ્ત્રોના આવા વૈભોના ગાનીશ વૈનુવર્મ
 દેવાથી તેમને વૈન સાહુ વર્ગમા અને શ્રાવ ગૃહમથમા પવુ સમાગેર થતો
 નથી. વૈન પીનાથસુત્રિ વિગે પામે ને તેઓ વૈનવમનુ સનિ
 ન બચે નો તે વૈન થા શકે તે વિના તે વૈન દેવાન નહી
 વૈનવર્મવૃત્તિને તે વૈભોના આદ્ય પુત્ર નથી અને અન્યવર્મોઓ નાસ્ત્રિ-
 અકરે, વૈન તેમને ।મે તેવા માને તેમા અમાગે નહીં સમઘ નથી ગ રી
 અમાગા વૈન સાહુઓનુ તો શુ ? પાપુત્રનારાગી શ્રાવ ની પગ મગાગી ની
 શક નહીં અને વૈનવમની શ્રદ્ધાની અપેાએ અવિ નિશ્રાવની પાવુ
 શ્રદ્ધાથી ની શકે નહીં ગાધીક વાવના ના તરીકે કૃષિગને માને છે
 અને વૈભો વગમ અનાનિવથી કે એમ વૈનકાઓના આગર માને
 છે તેથી દેવકા ધર્મ પગે વૈભોની અને ગાનીશી શ્રદ્ધા મિત્ર મિત્ર
 શ્રદ્ધાથી વતો ગાનીશને વૈન માનના નથી અને ગાનીશ પોતાને વૈન
 ની માનના પવુ નથી તે પોતાને તાગુદાર મદમા તરીકે માનતા નરી

અમેરિકાનો કે. પન્ગી અમર દા. સિદ્ધ ગંધીને તારખૂંદત
 વિલ વગેરે માને તેથી જતો તેમને તા ખૂંદર માની યાત્રા નધ
 હતો તો પોલીસ તીયત્વેને વિશુવનન્ય અધાન મન જમનના તાખૂ
 દાર માને છ અને અપેા એ ત્યા પી મહુ મુરિને તારખૂંદર મને
 છે અને તીયત્ત મુરિની આગને નમાખૂંદન માને છે પે. ૨૧
 ત્યાગી હર આ નવહી સરકોના જે પુ મોરીટુને
 આરેન મનન્ય નથી એમ જૈનશાસ્ત્રાપા સિદ્ધ થાર છે ગોરીછ પેને
 પશુ જાલાને છે કે હુ મના મા-ત્યાગી-નમુ તરખૂંદર નથી રજા
 મન મગ અન્ધરાગીઓ મનો તમા મા પિને મારી અન્ય વિરદ
 રજા કર છે " ગોરીછ અદિમાત્રી છ પતુ જૈનપમની અદેસા
 અને ગોરીછની માન્યતાની અદિમામા જનશાસ્ત્રોના આધારે મોગે એ
 છે ગોરીછએ મામ ખાવામા નથા પશુઓની ખવ કચામા મદાપ પ
 છે એમ ખાસ મુમ માનેને જવદરમા જાખૂંદુ નરી આે તેઓ લે
 મામ ખાવાના નિષ્ઠ માં રજા વિચારથી પ્રગતિ કરમે તો અમરી
 માન્યતામા પરિવન થમે તેઓ મામ ખાવા નથી જે તો અન્ય છ પશુ
 ખાનીના ત્યારની પેડે તેમ મુમ નિષ્ઠની પ્રગતિ ઉપાગી નીધી નથી તેમ
 રા ખીન સ્વરાત્ય પ્રામિમા અમર જનુધી અદિમને સાધન
 જન માની છે પશુ સવલ મરથા મિ ગાઠએ પુરુદિ મ ન કરી એમે
 પિતાને સ્વ સિદ્ધાત જાણુ પો નથી માનનિષ્ઠની પ્રગતિને મ ખાગી
 પરખાની પ્રગતિ પેડે ઉપાગી તા નથી જાણ્યાદિ મરએ સ્વ છ કાલ્પ
 તેમાં મામાત્રી કમોના નિષ્ઠથી અનુમાન ઉપર પ્રેરકો આવે છે
 જે તેમને માને નવી ઇત્યાદિ અનુમાન ઉપર પ્રેરકો આવે છે
 જ જૈનધર્મી સાધુઓ અને કાલક આવકો કે જેઓએ જૈનામ
 નો પશુ અભ્યામ કરા નથી તેઓ ગોરીછને જૈન-ત્યાગી વગ

આનંદ વર્ગથી ઉચ્ચ આર્શભૂત માને છે તે તો સામાન્ય અંત ઠોવાથી તેઓની વાત મન્ય મનાતી નથી ગાનીજી વગેરે વૈષ્ણવો અમને-ઈતને તેમના જેવા ન ગણે અને અમને નાસ્તિક કહે તેથી અમને હરખત નથી કૃષ્ણ દરેક ધર્મવાળાઓ પરમ્પર ઓષ્ટ ખીજની માથે મૈત્રી સુલેકમ પથી વર્તે અને દેરાનાયકને અજ્ઞાનતાથી ધર્મનાયક ન માની વે અને સ્વર્ગમાં દેા મમા મિત ધર્મની માન્યતાવાળા માથે ઝડપ ન કગવ તો સાધુ નેથી હિ નુ કાની સુધરે ગાનીજી વૈષ્ણવ છે જા તે તેને ધમની વ્યામનમા પોતાના ધર્મગુરુ તરીકે માનતા નથી તેથી તેમના અનરાગી મનેના અનુયાયીઓ કે જે જૈનધર્મી વગેરે ધર્મીઓ છે તથા ગણગા જાના વિશ્વર્થીઓ છે તેઓના પર ગાનીજીના નચુરાપણાની અમર થાન ડ અને તેથી તેઓ ધર્મશુભોના દુશ્મન નાસ્તિક બને છે અને તેઓ ધર્મન પ્રાચીન ચરણ્ય ખુએ છે અને વ્યાજના સ્વેશગચ્યને પણ પ્રાપ્ત ગી શ જાના નથી ચરણ્યની નીત્યાન પ્રતાગઓમા અને પક્ષ પડી ગયા છે ગાનીજીને નાસ્તિકપક્ષ લમમાયુને ચરણ્યપક્ષ મોડરેટોને પક્ષ એનીમેમન્ટનો પક્ષ એમ અને પક્ષો પડી ગયા છે રાજકીય વ્યામનમા ગાનીજી ધર્મની વ્યામન લુમાડીને હિન્દુ મુસ્લમાનનુ જૈન પ્રવા ધારે છે તે અથોચ છે તેથી તો બ નેમા ક્યેગ વ પો છે અસનન ગાથીએ પોતાની હિમાયત જેવડી બૂયો પોને કમન પ્રી છે તેથી તે નાસ્તિક વ્યામનમા પણ તે શિખાઉ નિવાર્થી છે રાજકીય નીત્યાતોથી રામિધ વ્યામનો જુની રાખની જોઈએ તે વ્યામતમા નિનકનુ મતવ્ય રી-હતુ જૈનો તે સ્વર્ગચ્યની ધૂનમા અને સુચારાની વૃનમા જૈનશાસ્ત્રોને અને ગુરુઓને ત્રિધાપી નાસ્તિક બ શે તો તેઓ ધમનુ મન્ય વ્યગચ્ય ખોઈ જેમનાના અને ધમને હાગી જવાથી વ્યાજરાજ્યની ચવનતાથી પણ ખરુ સુખ અને ઝાતિ પામગે નહી

પ્રથમ—જ્ઞાતપુત્ર મટાવીરતા ચોપાનીયામા લખે છે કે જેઓ ગાંધીજીની આજ્ઞા માનતા નથી તે જતો વીમહાવીર પ્રભુની આજ્ઞાનો ભંગ નિરૂપર કરે છે ગાંધીને તારણુદાર તરીકે જોઈને માનતા નથી તેઓ ગાંધીજીને એળખતા નથી હવ્યાદિ મનથી જૈનશાસ્ત્રોના આધારે શો પુત્રમા છે ?

કિતવું—જૈનશાસ્ત્રોના આધારે અર્થે કતા વ.લાય છે કે ગાંધીજી તારણુદાર નથી જે અર્થશબ્દો નરદિન ધેનગાની હોય છે પીતરાગ હોય છે અને મેઘનાથ મન વિવના પદાવોને અને મન મુખે વગેરેના મનને અન આત્મશાસ્ત્રોને હાથમા રહેવા આમગાની પેઠે જાણે છે તે તીર્થંકર મવન તારણુદાર છે ગાંધીજીમા એવું મનજ્ઞાન નથી દાકરે વન આત્માના મેકર નવન ધેનગાન તરીકે માને છે તે વેલગી દિદુઓનું ધેનગાન તેથી જૈનશાસ્ત્રોના આધારે ગાંધીજી ધેનગાની ઠરતા નથી મન પનજ્ઞાની તથા મધિગાની પણ ઠરતા નથી તેમજ જૈનાગમો શાસ્ત્રેની પૂણ્ય મ્હાન અનારે સમકિતી તથા ધુનગાની પણ ઠરતા નથી, અને તે જૈનશાસ્ત્ર નરદાર ક્રિએ માનુ તથા જાવન પણ ઠરતા નથી પ્રભુ મહાવીર શ્વામીના વખતમા પ્રભુ મટાવીરનો શ્રદાવાનુ અખડતાપસ હનો તેના નવ્યા વિશેને પાળનો હનો તો પણ તેને પ્રભુએ અમણુમણુ તરીકે માનો નથી એમ જૈનશાસ્ત્રોમા જણાવુ છે તે પ્રમાણે વિચારી જોતા ગાંધીજી તારણુદારનો શુ પણ જન અવગરનપપ્રમાણે જૈન પણ ઠરે નથી તો પછી તેમની આજ્ઞાને જતો ધમની બામનગ માની શકે નથી તે વખતે પન્માતમજ્યોતિ રામજી રમા ધેનગાનનો આત્મજ્ઞાનજ એમ અથ ધરનારાઓનુ સાનવિષે પોથી જૈનાગમોના આધારે ખડન મ્હું છે ગાંધીજીની ગાંધીન પ્રવૃત્તિમા અન્યજૈનેને શો અથ હાથે નો ભાગ લે પદ મોડરેટ પશ્ચાતિમે તે પક્ષમા ભાગ લે અને જૈનધમમા

પૂર્ણ શ્રદાનુ ગદ્દે અને ગીતાર્થ ગુરની આજ્ઞા પ્રમાણે ધર્મમા વર્તે એના ગૃહસ્થ જૈનોને એ દગા પ્રમાણે રાજકીય જ્ઞાનમા ભાગ લેના અમારા જૈનશાસ્ત્રી તથા અમારી મનાઈ નથી પણ જૈનશાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ ગાંધીજીની તો સામળવા પ્રમાણે એની ભાવના છે કે જૈન સાનુઓ-મન્યાસીઓ-આરાઓ-કૃષીરો-લાગીઓને રૈડીઓ કાતે તો ના સાગ ગાંધીજીના વિચારો રશિયાના મહાત્મા ગાંધીજીના અનુરણના અમુક ભાગ તરીકે છે મહાત્મા ટેલરેટોયે ધ્યાઈબલમા લખેલુ નરક છે જ નાહી એની પ્રશ્ન કરી છે, કારણ કે પ્રભુ ક્યાનુ પ્રેમી છે તે જીવોને દુઃખ આપવા નરક રચે નહીં આ જ્ઞાનમા ગાંધીજીની મા પતા તેરી છે કે કેમ ? તે તેમના ખુરામાથી મમજી ગમય ગાવી જ આવ-મમા જીઓની સાથે ચર્ચાના મૂલમુના સમયે જણાવે છે કે કોઈ પણ વર્ષમા મનુષ્ય સર્વજ્ઞ થયા નથી, મનુષ્ય ઈર્ષ્યા જણાવે છે તેથી સત્ય અને અસત્ય બન્નેથી મિશ્રજ્ઞાન હોય છે તેથી કોઈ ઈર્ષ્યા પરિપૂર્ણ સત્ય કહેનાયુ નથી. આના જ ભાવાયને તે જણાવે છે, પણ જૈનશાસ્ત્રો તો એમ જણાવે છે કે મનુષ્ય પરમાત્મા સર્વજ્ઞ બને છે ચોરીશ તીર્થંશ્રો સર્વજ્ઞ દેવો થયા, અને તેઓએ સપૂર્ણ સત્ય પ્રકાશ્યુ છે તેથી મર્મત મહાત્મા વગેરે તીર્થંશ્રોની માન્યતાથી ગાંધીજીની મા વના નિપરીત અસત્ય હોવાથી ગાંધીજી જૈન ઠરતા નથી પણ મિથ્યાત્વી ઠર છે અને ધર્મની જ્ઞાનમા તથા જૈનશાસ્ત્ર વિરુદ્ધ એવી તેમની માન્યતાઓને સત્ય ગીમરી લેનાર અન્ધદૃષ્ટિ રાગીઓનુ કહેવુ અસત્ય માનવુ અને ગાંધીજીની જૈનધર્મ વિરુદ્ધ આજ્ઞાઓને માનવામા જૈનોને મહામિથ્યાત્વ લાગે છે અને પ્રભુ મહાત્મા રહેવની આજ્ઞાના વિરાધપણાનો દોષ લાગે છે ઈત્યાદિ ગીતાર્થ ગુરગમથી સમજ લેવુ

પ્રશ્ન—જ્ઞાતપુત્ર મહાત્માના માનના ચોપાનિયામા પ્રભુને ધરેણુ આભૂષણો ચગવવા સળધીમા ગીમ ચર્ચા કરી છે તે મનથી ગાંધીજી ખુરાસો આપો છો ?

ધ્યો છે તેમા અદ્વિમા પાળવાની દોષ છે તેની પ્રતિજ્ઞા લેની પડે છે
 જના ચૈત્રીચુગની દિસા વગેરે તથા અન્ય વોટાળાઓ પણ ચએના છે
 જના મનુષ્યોનુ દોષુ ભેગુ થયુ કે ગામ ત્યા દેડનાજ જેનુ કદને ક /
 દોષ ડેજ, તેથી ચર્ચા કરનારાઓએ જાણુ કે તેમા પોતાની મમજ
 ફેર થાય છે અને તેથી વિનાશરણે જૈનસમાજને જૂરી રીને
 લક્ષી પડાવવામા આવે છે જૈનોના દેરામરો અને ઉપાશ્રમે પવિત્ર
 ગ્યાનો છે છતા ઝાઇ ખામ નામ માદ્વીપૂવક કઇ ઝાળને દોષ બનાવે
 તે તેથી સર્વ ત્યાગીઓને શુદ્ધ શ્રી શ્રેણિ-રાગની જૈનધમ ઉપરપૂર્ણ શ્રદ્ધા
 હતી તેની આગળ જે માનુષ્ય પોગળ જણાવનારુ રૂપ લીડુ અને
 માત્રીનુ ખરાગ રૂપ લીધુ તે પણ શ્રેણિક રાગને જણાવુ કે તમારા
 કર્મના ઉત્પત્તિ તમારી એની ઈશા થઈ છે તેથી અન્યમાનુઓ અને
 સાતીઓ ક' તમારા જેવા નથી, તેની સાડુ વર્ગ ઉપરથી મારી શ્રદ્ધા
 ઉભી રાખે નહીં શ્રેણિ ગમ્મની આવી અખડપૂર્ણ શ્રદ્ધાથી દેવ
 પ્રસન્ન થયો અને શ્રેણિક ગમ્મને હાર વગેરે આપ્યુ આત્માર્થી જીવો
 તેા દુર્ગુણ દુરાચારનુ સ્વરૂપ જણાવે છે પણ કોઇ દુર્ગુણ દુરાચારીનુ નામ
 ધ નિન્દા કરતા નથી, એમ પ્રભુ મહાતીરતા શાસ્ત્રો જણાવે છે જે
 આપ સુધે છે તે મૌન રહે છે તેા પણ દુનિયાને અમર થાય છે, જે
 નામ દેધને નિદા ક' છે તે ચોવો પાપીચકાન છે માટે આત્માર્થી જૈનો
 તેા જૈનશાસ્ત્રના આરાગે આત્મશ્યાણુ કરે છે

પ્રશ્ન—પ્રેતરાક્ષની એવી માન્યતા છે કે મનુષ્ય સર્વજ્ઞ બની શકતો
 નથી બહુતો બહુ બહુ સનજ બની શકે છે તથા કેટલાક માને છે કે
 પ્રભુ મહાતીરે બ્રાહ્મણોની માથે બળવો ડેરો તેનો શો ખુનસો છે ?

ઉત્તર—જૈનશાસ્ત્રોની માન્યતા છે કે મનુષ્ય રાગદ્વેષાદિ કર્મને
 કાષ્ટ કરીને સર્વજ્ઞ બીનરાગ થઇ શકે છે જૈમીનીઆદિ મીમામંકે મનુષ્ય

સવન નથી અને એ જ જગત્કર્તા હવે નથી અને તે સર્વજ્ઞ નથી એમ માને છે જૈનો તેની માન્યતાને સ્વીકારતા નથી પ્રભુ મહારીરદેવે સવન અરિહત યજ્ઞને સમવમરણુમાએમીને જે મનુષ્યો વગેરે સામળવા આવ્યા તેઓને ઉપેશ દીને અને તેઓએ જૈનધર્મ અગીખરકર્ષો શ્રીમહારીર વનુતા પેનાં પણ પાત્રનાયતા મમરમા ચાએ વણુના મનુષ્યો જૈનધર્મ પાળતા હતા અને કેટલાક અન્યધર્મોને પાળતા હતા તેમા જેઓને જે રૂએ તે ધર્મ પાને પ્રભુ મહારીરદેવે જૈનધર્મનો ઉપદેશ આપેો હતો, તેમને હારમા રાખ્યો વગેરેમા પ્રગળ્યા શસ્ત્રાસ્ત્રથી બળવો કરે છે તેની ઉપમા આપી રાકાયન નહીં એનાકે રાગિત બનેના જૈનો પ્રભુ મહારીર અને ત્રી પા વનાયતી પેરના તીયકરોને ક્ષિપત હતા મરવા માને છે પણ એવી માન્યતાવાળાઓને જૈનધર્મના ઉત્તિહાસપર શ્રદ્ધા ન હોવાથી ખેને અટકાય છે અને અમેને નાસ્તિક કી બોલા જૈનોની વિલકુ જેવા અવસ્થા કરે છે જ્યા મુધી જેઓ જૈનશાસ્ત્રોના પૂરા પારગામી થા નથી ત્યા તુચી તેઓએ જે જે કાએ પડે તેનો ખુરાસો મેજવના જૈનશાસ્ત્રો વગેરેનો પૂણુ અભ્યાસ કરવો અને ગાનાર્ય પુસ્ત્રોને પુ જ્ઞુ અનનમનને ઇતિહાસ એમ અવવિચ્છાદિ રાન થવા વિના જાણી શકાય નહીં માટે પ્રથમશાસ્ત્રોનો અભ્યાસ સારી રીતે કરવો જોયી માનાતર કેટલા ખુરામા મહેજે આપેઆપ થઇ જાય છે.

પ્રશ્ન—એનાં કહે છે કે જાનકા-સિદ્ધાચન તીય છે તે પાછળથી થયુ છે અને ત્રી મનિખન સવન દેમય ત્યાય પણ પોતાના બધેન અન્યમા નિહાસ પર તીર્થકરો આવ્યા હતા એવુ જાણવાના નથી તે સખરી ગણ ખુનાનો છે ? હાનો શત્રુજય મહાત્મ્ય અન્ય છે તે પ્રાય ક્ષિપત કે એમ કાએ પુરાતત્વ મામિકમા જાલા તુ છે તેનું કમ ?

હતર—શ્રી દેમય ત્યાયે સ્વરચિતનિન િશવામ પુર ત્યગિન અ રમા

શ્રી ઋષભદેવ પ્રભુ શ્રી સિદ્ધાચન પર્વતપર પવાર્ષા તથા ત્યા પુડરીક ગણુ
 ધર પધાર્ષા તથા પુડરગિરિ નામની સ્થાપના વગેરેનું વર્ણન કર્યું છે શ્રી
 હેમચદ્રાચાર્યની પૂર્વે પશુ શત્રુજય કુગર તીર્થ તરીકે મનાતો હતો, બર
 તગમ્મએ મિદ્ધાચનનો સઘ ઠ્ઠાડ્યો હતો. વિક્રમરાજએ શ્રી સિદ્ધમેન
 સ્મરિના ઉપદેશથી સિદ્ધાચનનો સઘ ઠ્ઠાડ્યો હતો. મળસૂત્ર વિષાકમા પશુ
 જાણસત્તુજયે સિદ્ધે દ્વિત્વાદિ પાક છે દિગમરો પશુ પ્રાચીન પુરાણોના
 આધારે મિદ્ધાચનને તીર્થ માને છે જાવડશાહે શત્રુજયનો ઉદ્ધાર કર્યો
 હતો એમ પ્રાચીનપુસ્તકોથી મિદ્ધ યાપ છે હેમચદ્રાચાર્યની પૂના
 મિદ્ધાચનપર દેરામગે હતા, તેની કુમારપારે અને શ્રી હેમચદ્રાચાર્ય સ્ત
 વના યાના શ્રી છે, તેથી મિદ્ધાચન પ્રાચીન તીર્થ છે એમ સિદ્ધ યા છે
 અને શ્રી હેમચદ્રાચાર્ય પૂર્વે શત્રુજય કૃપ વગેરે પ્રાચીન ગ્રંથો હતા એમ
 મિદ્ધ યાપ છે શાતા સૂત્ર તથા અતગડ દ્વાગમસૂત્રમા જાણ સેત્તુજયે
 સિદ્ધા ઈત્યાદિ મિદ્ધાચન તીર્થના પ્રમાણો છે કેટલાક કહે છે કે શત્રુજય
 માહાત્મ્યગ્રંથ, આધુનિક ચિત્રમા પત્તરમા સૈક પછીના છે. તેમા
 કેટલાક પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોનું અનુકરણ કરનારા કહે છે કે પત્તરમા સોળમા સંમના
 એક પુસ્તકોના સુચિપત્રમા શત્રુજયમાહાત્મ્ય ગ્રંથની નોંધ નથી અમે
 તાસનથી જાણીએ જીએ કે તેમની એ નોંધમા તોળીનધર્મગ્રંથો પૈકી
 જાણા ગ્રંથો જોવામા આવના નથી, તથા એકબહારની નોંધમા જનધર્મના સર્વ
 પુસ્તકો ટોચ છે એવો નિશ્ચય છેજ નહીં, પ્રથમ ખડીઆના નામો કેટલીક
 વખત કેટલાક કોણારો તે પોતાની પાસે હતા બૂલી ગયા છે, તે તેવા
 મ યમહારની સુચિપત્ર કરતા પાસે વાચવા પુસ્તક બહાર ટોવાથી
 માપિ મ યમહારની યાદીમા ન દાખવ કર્યું હોય એમ કેમ ન બને !
 પત્તરમા ચો મી સદીના સર્વ વૈનમ યમહારોની યાદીઓ જો મળી આવે
 અને સર્વ વૈનશાસ્ત્ર બહારગેમાથી તેનું નામ પછી જો ન આવે તો ત્યારે તે

રી છે તેથી અગી હજાર વર્ષ ઉપર ચનાર સર્વજ્ઞ વીતરાગ મહાવીર દેવની પેઠે ગાનીજમા સત્યો પ્રકાશવાની શક્તિ નથી, દારણુ કે ગાંધીજી સમગ્રેય દોરવદિન થયા નથી પ્રભુ મહાવીરદેવે સર્વ સાનવોગનો ત્યાગ ખ્યો હતો અને આરન્યસુધી ધ્યાન ધરી કેવળજ્ઞાની થયા હતા. ગાનીજી તો ત્યાગ માર્ગ કરના નિદેહી જન્ય જ્યેવો ગૃહસ્થાશ્રમ સારો માની તેમ રહેવાની શ્ચિ ધરાવે છે પ્રભુ મહાવીર દેવ તો સર્વ છવોના સર્વ પગિણા મેને સાક્ષાત્ જાણના ઠતા અને ગાનીજમા તો દ્વાર્ધ પણ મનુષ્યના અતરના આક્ષાત્ વિચારોને જાણવા ની શક્તિ પ્રગમી નથી તેથી ચોવીશમા તીર્થધર મહાવીર પ્રભુની પેઠે શ્પાતરે પણ ગાનીજી આક્ષાત્ સર્વ પત્તરોના મનો જાણવાની શક્તિ ધરાવના નથી તેમજો તેમના મિનતુ થોમ, સમ્યક્ પુસ્તક ગોઠે પુસ્તકો વાચ્યા હોને તેથી નહ શુરગમ વિના જૈનશાસ્ત્રોના જ્ઞાની અને તેના વ્રદ્વાણુ પણ કની શખય નહીં, તેમને જૈનશાસ્ત્રોમાની કેવળી વાનો ઉચે તેથી કઈ જૈન પણ કહેવાય નહીં તેમના નીનિના આચારો સારા ઠોય, તેમ ની પેઠે તો ખીન્ની મુખનમાનો પેકા કેટલાકના સારા નીનિનાજા આચારો હોય તેથી તે જૈનધર્મો ગણાય નહીં અને તેથી તેવા ના સયનીનિની પ્રગતિ માનથી પ્રભુ મહાવીરની પેઠે શ્પાતર મત્યના પ્રગમ પણ તે હેવાય નહીં આપજો જૈનો, ગાંધીજી વગેરે સવ મનુષ્યો માથે શુદ્ધ પ્રેમથી મૈત્રી રાખી રાખીએ પણ તેમના વિચારો છે તે પ્રભુ મહાવીરના મત્યો છે એમ શ્વાપિ માની રાખીએ નહીં પ્રભુ મહાવીરદેવની પાપરપરામા આજ્ઞા અને ત્યાગી વૈરાગી પય મહાવ્રતવારી અનેક ગુણી આચારો ઉપાધ્યાયો, માતુઓ અને સાધ્વીઓ થઈ છે અને હાન વિદ્યમાન છે તેઓએ જ પ્રભુ મહાવીર દેવના સત્યોને પ્રમત્યા છે અને હાન પ્રમગે છે તેમના અનુયાયી જૈનો જ પ્રભુ મહાવીરના સત્યોને જૈનશાસ્ત્રાનુસારે પ્રમલી રાકે છે તેથી શ્પાતરે ખીજ

મરાય છે અને ગાંધીજીની ચળવળ પછી હિંદુમુમ માનના કષ્ટગ્રાહી વચવા
 લાગ્યા છે ધર્મની દૃષ્ટિએ કાંઈ માને હિંદુ અને મુસ માનોની એમના
 સિદ્ધ થઈ નથી અને થવાની નથી ત્રિવીશ આંદોલનના બદોબસનથી
 બને કામમા સુનેહશાનિ જળસાધ એ તા ન આવી શકે અને બનતી પશુ
 ધર્મની દૃષ્ટિએ બનેમા એ તા ન આવી શકે રાજ્ય દૃષ્ટિએ બનેને
 બાલકવાય એમરૂપે હોવાની બને ॥ ઉપર અન્યાય શુ મ થવાથી
 બને ધાર્મિક અમુકનીતિરીતિનમ્યાએ સપીને વને તે તો સ્વાર્થી સમધ
 હોવાથી સમય અને શુ એમ વારનાર નયા જ છે ધર્મની દૃષ્ટિએ
 હજી સુધી ગાંધીજીએ હિંદુ મોની અને મુમ માનોની એમના-એકસપી
 કરાવી નથી અને સમય દિએ પણ ખીનાકનની ચળવળ બધ પડયા
 પછી ખરી એકસપી થએરી દેખાતી નથી ત્યાંક હિંદુઓ અને
 મુમ માનો સમય દૃષ્ટિએ સપીને ચારે ઠ એમ કીએ તો પશુ તેથી
 બને કામના મોગ ભાગમા એમના-સપ જેડુ વાતાવરણ ખી યુ નથી
 ગાંધીજીને પણ બન થઈ નથી ગાંધીજીને જુનાની પશુ મરથા
 બધ થઈ નથી તેથી હાન સુધી તા તેઓ હિંદુ મુસ્લીમ ગાંધી
 એકના કરનારા ગાંધી રાજય ના નેમની હિંદુ મુસ્લીમ એમ કરનારી
 બાનના સાચી છે તે બને તો ગાંધીજી માવન નાખ ગાંધી કષાય છે
 તે ગમે તે રીતે પણ હિંદુ સ્વતન થાન તો પણ ગાંધીજીને કષાય છે
 થાય એડુ મુમ માનોથી પ્રોખિતઓથી ભનુ આમ્ય છે ગાંધીજીને
 બધ પ્રવાની હીનનાન શર પ્રવી નેહએ પપુ ગાંધીજીને ત્રી એમના પ્રી
 તથા ગાંધીને મારવાની બધી કરાવી એમાનુ હજી સુધી બહુ ધર્મમાન હ
 તેઓએ ધર્મશુરઓથી સમયાયો નેવાથી વિન મહાન ધર્મમાન હ
 સુધી કયુ નથી એડુ ધર્મકય કરવાની ભાવના અને યોડી ધર્મી પ્રવૃત્તિ
 તો અનેક સાધુઓ તથા દેસનેનાઓ પ્રેરે તેમ ગાંધીજી વગેરે પણ ઠરે

છે માટે ગાવીશ્વનો મહિમા ગાળને ધમગુરુઓની દીનતા દેખાડના પ્રયત્ન
 કર્યો તે જ દેશની ધમની પ્રગતિમાં નિત નાખના જેવું કાર્ય છે અમ
 બર જેવા બા શાહે હિંદુ મુસ માનની એકતા કરવાની ચળવળ ચલાવી
 હતી. કૃષ્ણે પણ બન્ને કોમની ધર્મથી એકતા કરવાની પ્રવૃત્તિ સેવી
 હતી પણ ચર્ચ નહીં દેશનેતાઓ અને પ્રજાકેન્દ્રી ગરબોમા-મનોમા વહેંચાઈ
 ગયા છે અને તેઓ એક ચર્ચ શક્તા નથી તો કોડો હિંદુઓનું અને
 મુસ માનોનું એક સાધનું મહા મુરતે । છે માટે સ્વરાજ્યની ચળવળમાં
 ધી ધર્મની બામનોને દૂર કરી પ્રવતવામાં જ ઓછા ઝવડાનો પ્રસંગ રહેશે
 બને નમો વારવાર પરમ્પર લડે અને વારવાર સુનેહ સપ કરે એમ હિંદુ
 મુસ માનોમાં થયા ગયાનું જ ગાવીશ્વનેની એમ પીડા પિકરાવે તો તેથી પણ
 જન ત્યાગી મુનિ ધર્મગુરુઓના કરતા તેઓ મહાનુ મની શકે નહીં અને તેમને
 આખી દુનિયા નખાણે માને તો પણ તે રાગદ્વેષ રહિત રીતરાગ થયા વિના તે
 ડેટના જૈનની માન્યતાવાળા તીર્થ રજિનતારણુટાર બની શક નહી તેમણે
 સાક્ષારિ પ્રવૃત્તિને ત્યાગ્યો યથી, રાની બોજનનો ત્યાગ્યો હોય ના કલમજનો
 ત્યાગ્યો હાન વા કાયા પાણી પીવાનો તથા કાયા પાણીમાં ન્હાવો ત્યાગ
 ય્યો હોય, ના ખેતી વગેરે ધધાનો ત્યાગ કર્યો હોય વા રાનના રધાનાનો
 ત્યાગ ય્યો હોય એવું અમાગ જાણુનામાં નથી તથા જૈન દેવસ્થાન દરવા જતા
 હોય વા માંડુ નાન કરના જતા હોય એવું પણ જાણુનામાં નથી તેથી
 તેમના ખુનામના વિના તેમના જૈન ત્યાગની ખમગ પડે નહી તે નવનાચાયના
 અપ્રવૃત્તિ નેચાન હોય તો દીનુ કરે તે પણ સમજાતુ નથી તે વેપક્રિયા
 વિના પુરોથી મજાન છે એમ નહીએ તો તેથી પણ ત્યાગી ધમગુ
 રુઓના કરતા મહાનુ નથી પરદેલી ગુરુઓને તે સર્વથા વાપગતા નથી પ્રેમ
 ખુ મિત્ર થતુ નથી તે મોટગાડી ર વેમા મેસે છે, પરદેલી પ્રેમનો
 બપોગ પ્રે છે દેલી કાગજો વાપગતા હોય એવો તેમનો નિયમ નથી

સાગરમતી સત્યાગ્રહાચરના મહાનોખા પરદેશી વસ્તુઓ માત્ર પડે છે રંગ
પણ પરદેશી હોય છે પરદેશી તાળા હોય છે ચમ્પા પરદેશી હોય છે,
માધીજીએ કાપ્પરોની મતથી તમિલ સુધારી હતી અંગ્રેજી પુસ્તકો
વાપરે છે એકની ખાદી વાપરી અને ધજોખરો તો પરદેશી જ્ઞાનમ
વગેરે વસ્તુઓનો ઉપયોગ થાય તેથી કહ્યું પરદેશી વસ્તુના ત્યાગના આદર્શ
ત્યાગ તરીકે પણ માધીજી મદાન ગણાય નહીં તેથી જૈનધર્મની દૃષ્ટિએ ત્યાગી
સંતુ આચારો કરતા માધીજી ધર્મની બાબતમાં મદાન માની શકાતા નથી.

પ્રશ્ન—કેટલાક શક્તિ જૈનો કહે છે કે પ્રતુ મદારીરેને આહારોની
સત્તાના જૂ મથી પ્રાણને દીક્ષા લીધી હતી તેનું કેમ ?

ઉત્તર—એવા શક્તિ જૈનો કહેવનું પતંગના પુરાણના અર્થમાં કહી
વનારા છે મનુષ્યકે તે કેટલાક પાંચાત્ય વિદ્વાનોના જૂમ અનુમાનના તરંગોપર
ચરે છે તેઓ કહી શકે તેના પુરાવો આપી શકતા નથી. પ્રતુએ તો આ મ
ધ્યાન ધરી કેવલજ્ઞાન પ્રમાણવાને દીક્ષા લીધી હતી કલ્પે તો તે વખતે
તેમની પ્રસથા કમળા હતા અને પ્રતુ મદારીર તીર્થંકર થી જન્મીને ઉદ્ધાર ક
વાના છે એમ જ્ઞાનના હતા જ્ઞાનના આહારોને અને જૈનોને દેખી તે
વખતના આહારોનો જન્મને કલ્પી જૂમ વિચારો દોડવા એમ જૈનનું
વક્તવ્ય નથી.

પ્રશ્ન—મરીચિએ વિહીનો વેર ધારણ કર્યો તેને સપમદેવ પામે
સાતુઓ મરવાને મનુ જો મોકલ્યા ત્યજી બ્યારે તે માલો પડ્યો ત્યારે તેની
મોક્ષ સાતુએ સેવા કરી નહીં અને ત્રાવકોએ પણ સેવા કરી નહીં તેથી
મરીચિએ મ્પિતને દીક્ષા આપી તેમ જ શ્રી સપમદેવના સાતુઓએ અને
આરોએ મરીચિની સેવા નહીં કરી તેથી તેઓ ની અપિનેકતા મશાય કે નહીં

ઉત્તર—શ્રી સપમદેવ વીતગમ મવલ હતા તેથી તે મરીચિની સેવ
પ્રે નહીં સાતુઓ પણ મરીચિથી ધામ મહેત્ત હતા અને વિહાર મરતા હ

તથા તે માંધુ દીક્ષાસયમમા હતા અને મરીચિ પડી ગયા હતા મરીચિએ વર્ણુશ્મર વેવાચાર રચાએ। તેથી સધને તે ગમ્યુ નહીં, સાધુઓ વગેરે તેથી તેમની પાસે રહી સેવા કરી શકે નહીં તેમ જ તેઓને દૂર રહે વાંચી મરીચિની માંગીની ખમર પણ ન હોય તથા મરીચિએ સેવા ધ્યાનવા માટે માગળી ન કરી હોય તથા મરીચિ વનમા રહેના હતા અને તેમને આહારપાણી લાની આપવો તે તો સાધુ જેવાનું કાર્ય હોય છે તેથી ગૃહમ્ય જૈનો આહાર વહોરાની શકે પણ ભીક્ષા માગીને લાવી ન આપી શકે, તેથી તેમા આવડેનો અવિવેક ગણાય નહીં તે વખતના માંધુઓ અને વ્રાવકો ઋગ્નુ-મરન અને જડ હતા અને પ્રભુ મહાવીરના માંધુઓ વધ અને જડ છે તેથી ઋપમદેવના માંધુઓ જુદા વેપાગીની ખમર ન લેવા જાય તેમા તેનુ પતિનપણુ જાણી લક્ષ્ય ન આપે તો તેથી કઇ જૈનધર્મ શાસ્ત્રોનો, સાંધુઓનો દોષ નથી તેમ જ પ્રભુના ઉપદેશની ખામી નથી તેથી તેની ચર્ચાનો ક' અર્થ જ' નથી

પ્રશ્ન—હાનમા કેટલાક સુધારક નામનાગે શમ્ભિ જૈનો, માંધુઓની ખગેર ખાનગીમા ગુપ્ત નામે નિદા ઝાપે છે છપાવે છે અને ધર્મશાસ્ત્રોમા સમ ઉપવે છે તેનુ શુ કારણ છે ?

ઉત્તર—જૈનધર્મની વ્યાપનમા માંધુ વમગુરુઓ મુખ્ય હોય છે, ધર્મ શુઓ જુદા સુધારા, વગેરે વ્યાપનોમા આડા આવે છે, નાસ્તિકોના નાસ્તિક વિચારોનું ખડન કરે છે મડમોની સાથે લગ્ન કરનાનું નિરોધ કરે છે ત્રી મામ વાપરવાનો નિરોધ કરે છે, જગીઆઓની સાથે ખાતુ નહીં એમ ઉપદેશ આપે છે તેથી વિદ્વદ્વપ્રતિવાળાઓ, સાધુ ગુરુના દુરમન બની જાય છે અને તેમોની ઉપર જુદા આજ ચલાવે છે તેઓ જાણે છે કે સાંધુઓ ઝાંખા જમાના નથી, સૃષ્ટિનિરુદ્ધ કર્મ રનારા વગેરે કહેવાથી તેઓપર જનના ને સમ પડે તથા એ જ આ વિધઓની સાથે વાતો

કરતા હતા એમ કહી આજ સુધી તેઓ તેઓ અમમા હનમ પો
 અને સામા પો નહીં તથા કરી જાય અને આનરદીન યદ્ય જાપ આવી
 જાનની પ્રતીક નિદા ટોળીઓ ઉની યદ્ય છે અને તે રશિયન મે, રોનિમ
 જેવી અનુચીતિ સહ છે અને જદાથી અદિ સ્થાને ગિદ્દાન જાણાવે છે તેઓ
 નાતજાન ધમ વગેરના માગેનો નાજ કરવા ધ છે છે એવા પ્રેરક માધી
 છતાં ટોળામા જાને છે એવા કુર્કીની નામ્લિત જાને ધણુ વાચાણ અને
 કુર્કીની રોષ છે કે જેઓની આગળ કદના જોળા વિચાન જાને તારી
 પણ જાન તથી તેનાઓના વિચારનો વિધાય ન ગમ્પવે

જિનેશ્વર જમવાતી પ્રનિમાને વસ્ત્રાનુભા મમનવાતા નેનશાસ્ત્રમા
 પામે છે મહુઓ વનુરુઓ અન વા ગાયાવાતી પાપ પર એમી વ્યાખ્યાન
 વચે છે તેમા અન વા પૂજીવા વગેરેથી ચુરની પોમા બક્તિ કરવામા
 રૂ પ્રવેશ મરોમવ વગેરેના જેઓ વાધા તેના નથી તેઓએ વીનરાગ
 રેવની પ્રનિમાની બક્તિ કરવામા વાગે તેના પોતાના ન્યામ વેરાઅ ઉપર
 સદા દેહુ તેઓ જાન ધમનતત સાદુ મુરિયો નોરેન સદામા પ્રતિ
 પરીઓ પો અને જાનવાઓમા તમ વિરોધ પ્ર અને ચુરઓની નિદા
 કરે તેથી મ્હ ધમ સદાચુરઓ કરી જાને જેસી જાપ નહીં વિચાર
 બેદે વરી કુમ્બોએ જના જાનાની નિદા કરી છે અરવિદ યોન વગેર
 દેશ નાવમેની સદામા પો જાઓએ જેસી ધૂળ ઉ ડી છે જીન એવોએ/મા
 માત્રા માધીજની નિદા જ પોહ કરવામા આસી છે તેથી માધીજને કર્ક
 હર ન નથી પ્રનિપત્તિદેએ અજ સુધીના મદાપુતોતી સ્ત્રામે ધૂળ
 ઉ પી છે જીનાઓએ સાદુઓના પ્રતિપત્તિ અને ના નિદેએ આજ મુની
 મુજ સદામે ધૂળ ઉ હવા જેવી પણી પ્રતિ સેની છે અને તેથી તેઓ
 વ્યાયા તથી અને તેઓએ પાનાનુ મય કરું છે પ્રતિપત્તિ વિરોધીઓ
 ધ ધમ ધુરુઓને મારી નાખવા સુધીના તપ્પે પડવતો રચે અને તેથી ધમ

રક્ષક મરી જતા પણ કંઈસત્યધર્મ વિચારોનો ત્યાગ કરતા નથી અગોએ
 મદનું નામ દોનિ પ્રત્યુત્તર લખ્યો નથી રૂપ ઉપર્યુક્ત વિચારોથી તેના
 પ્રતિપક્ષી વિચારોનો જવાબ આપ્યો છે એમથી મન્યસ્થમત્યઆદ્યે
 જે વિચાર કરશે તે તેમથી તેઓ ધણ લેનાતુ મળશે ગાનીજી, નિન્દ,
 તમનામુ વગેરે દેશ નાયનેના દેશ નાયત્વ સામે અમારે વિરોધ નથી પણ
 યાના લા-પતરાય વગેરે કે જેઓ જૈન ધર્મ તીર્થંકર વગેરે સમઘી નિરૂધ
 વિચારો જાહેર કરે છે તેઓનો તે ઉત્તર આપવો જોઈએ જ્ઞાતપુત્રમહા
 વીન્દ્યા અગે ગાંધી ભક્તે જે વિચારે છપાયા હતા તેમા પ્રસંગે ગાંધીજી
 સમઘી અમાગ વિચારોને જૈનગાંધીવાર જાહેર કર્યા, તેમા ગાનીજીના
 અગત ચાગિન સળધમા અમે ઉતયા નથી, અ ય ધર્મી સનગોએમાં હુ
 ગાનીજીને પ્રથમ નમરના ઉત્તમ ભક્ત લીધિ મહાત્મા તરીકે માત્ર હુ
 તે ખગ વેશમક્ત છે પણ જૈનધર્મદટિએ તે જૈન મહાત્મા નથી
 એવો મારો અગતવિચાર છે ગાનીજી વગેરે દેશનાયને માયે
 શુદ્ધ જો દેશરાજકીય અળવળમા ભાગ લ તેમા અમારો વાગો થી
 પણ તેની માયે અમારા તીર્થંકરોની અને ગુરુઓની પ્રકાશમા ગાનીજીને
 મૂકીને માત્ર શુઓ રહામે પડનારા ગાની વગેરે દેશનાયનેના અ વ દટિ
 રાની નામ્નિશ્ચકિતજૈનો પ્રતિ તેમની ચચાનો જવાબ છે અને
 ભવિષ્યમા તેઓ આ લેખનો હત્તર આપે તે તેના સામા હવના
 મુંધી જવાબ આપવા તૈયાર રહીશ જૈનોએ ધર્મપરિવર્તનમહાયુજના
 મદાનિનુમમા જૈનગાંધીને ઉશવનારાઓનો નિશ્ચાન ન કરો
 અને તેનોના ઉત્પન્ન વિચારો મામે વિરોધ જાહેર કરવો જોઈએ
 જૈનોએ ગાનીરિષ્ માનસિષ્ ધાર્મિ- ણવલીનુ નિશ્ચાન લેતુ આ
 જૈનગાંધીને ઉપદેશાનુસારે વર્તવુ જૈનધર્મ માટે જૈનેતર ધર્મીઓ કે
 જે સામાન્ય અહિસા દર્શાવતા હોય તેઓના વર્ગીભક્ત ન થવુ હિ_ઓના

જેવા કઈક વિચારવારે મળતા બનીને આગાખાની મુસ માનો કરોડો રૂપિયા ખર્ચાને હમરો ઉપદેશકો રાખીને હિંદુઓને આગાખાની મુસ માનો બનાવે છે ખ્રીસ્તિયોએ પણ હિંદુઓને અને જૈનોને ખ્રીસ્તિયોએ ખર્ચા હમરો ઉપારો કરી લાખો મનુષ્યોને ખ્રીસ્તિ બનાવ્યા છે જૈનો તમે જાગો! જૈનસાસનચતુઓથી બચી જાઓ! ધમ માટે અર્પાઈ જાઓ! સાધુઓના નાશની સાથે ગૃહસ્થ જૈન સંધનો પણ નાશ થશે માટે ધર્મગુરુઓની સેવાભક્તિ કરાને શાસ્ત્રોના જૈન સંધનો વિશ્વાસમાં મદાતમાં ગાંધીજી માટે શો અભિપ્રાય છે તેનાઓ મનો જૈનધર્મનો વિશ્વાસમાં પ્રચાર કરવો જોઈએ

પ્રશ્ન—તમારો પોતાનો મદાતમાં ગાંધીજી માટે શો અભિપ્રાય છે અને મદાતમાં ગાંધીજી હિંદુ મુસનમાનની એમતા કરે છે તથા ટેડબગીને અગ્ય ગે છે તથા રૂઝીયા ખાદીની પ્રવૃત્તિ કરે છે તેમાં તમારો જ્ઞાતિ અભિપ્રાય રો છે ?

ઉત્તર—અવગરથી જૈનધર્મની દૃષ્ટિએ તેમને હું જૈનગૃહસ્થ વા જૈન માંડ મનતો નથી પણ તિહ દેશનાયકોમાં સનપુરપોમાં વિશેષ મન્યતાની મરત અને ગુણાનુરાગી મને મધ્યગ્ય અને મોક્ષમાર્ગાનુમારી યાગિના પુ રોમાં રોગ્ય ન તરીકે છે એમ માનુ છું હિંદુ મુસનમાનની એકતા થાય અગર ન થાય તો પણ તેમની ભાવના અને પ્રવૃત્તિને તો સારી માનુ છું હિંદુ સંપ્રદાયો જેવા તે ત્યાગી નથી પણ તે ત્યાગીના કૌના ગુણોથી યુક્ત છે જૈનશાસ્ત્રોની દૃષ્ટિએ તે વ્યવહારથી જૈનવા ત્યાગી નથી તેમનામાં ધર્મમનમનિષ્ઠતા ગુણ મારા પ્રમાણમાં પી પે છે અને તેથી તે સમગ્ર ટ્રિગુણધાનને ભવિનવ્યના પ્રોજે પામવાને તથા જ એમનામાં દેશ જ સારી છે તે બગીને સ્પર્શ માનવા એની તેમની મન્યતાવાળો હું નથી પણ હું ટેડબગીઓ સ્પર્શ થાય એના ઉપારો કરવાની તરફેણમાં હું નેઓ પ્રવૃત્તિ પામતો તથા દારૂ મામ વગેરેનો ત્યાગ કરવો

મશીનના છડશે સાત્વિકાચારવિચારમા આરઠ થશે તેા હળવે હળવે તેઓ સ્પર્શ થઈ શકશે તેમની રેટિયા ખાતેની પ્રવૃત્તિ, અહિ માની દૃષ્ટિએ ઉપયોગી છે પણ તે મરણયાત થવી જોઈએ, વૈષ્ણવમક્ટામહાત્મા ગાંધીમા જે જે શુભો અમને જણાય છે તેની અમો અનુમોહના કરીએ છીએ, તે પોતાને તીર્થધર, પ્રજુ અવતાર, ત્યાગી, મહાત્મા કહેનારા તેમના અધ ભકતોને વખોડી કાઢે છે અને તેઓને જૂઠા કહે છે, એની તેમની માન્યતા છે તે સાચી છે અને એમના ઠહેવા પ્રમાણે અમો તેમના સમ્બંધી એવા ઉપર્યુક્ત વિચાર બાધીએ છીએ તેઓ હિંદુ મુમ માનોને જે એ તા નપ પ્રેમનો પાદ શિખવે છે તે મારો છે બાપી જૈન શાસ્ત્રોના આચારે અમો ગાંધીજીને વૈષ્ણવ ભક્ત તરીકે માનીએ છીએ અને એમ જૈન શાસ્ત્રોના આચારે જૈનોએ પણ માનવું જોઈએ

इत्येव ॐ अर्द्धमहावीर शान्ति ३

વિ મ ૧૯૮૦ આરપુ સુિ પચમી

લેખક બુદ્ધિમાગર

મુ૦ પેલાપુર.



